Delhi Postal Regd. No. DL (C)-01/1272/2024 R.N.I No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

ते धीरा बंधणुम्मुक्का,
णावकंखंति जीवियं।
जो कामभोगमय जीवन की आकांक्षा नहीं करते वे धीर पुरुष बंधन से मुक्त हो जाते हैं।

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 16 • 22-28 जनवरी, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 20-01-2024 • पेज : 12 • ₹10 रुपये

अहिंसा को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है समता : आचार्यश्री महाश्रमण

ठाणा, १६ जनवरी, २०२४

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज पंच दिवसीय प्रवास हेतु ठाणा पधारे।

मंगल पुरुष आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर अहिंसा की वृत्ति भी होती है, तो हिंसा की वृत्ति भी आदमी की चेतना में हो सकती है। हिंसा और अहिंसा दोनों आदमी के जीवन में देखी जा सकती है। हिंसा का अभाव अहिंसा है। हिंसा की पृष्ठभूमि में राग या द्वेष की वृत्ति काम करती है।

जीवन व्यवहार में हिंसा-अहिंसा को देखा जा सकता है। हिंसा-अहिंसा के भाव मनुष्य के मन में रहते हैं। हिंसा के पीछे परिग्रह का भी हाथ होता है। अपरिग्रह परम धर्म होता है। परिग्रह या लोभ के कारण व्यक्ति हिंसा में प्रवृत्त हो सकता है।

भूखमरी, गरीबी और बेरोजगारी भी हिंसा में योगभूत बन सकती है। जब व्यक्ति अभावग्रस्त होता है तब वह अभाव से छुटकारा पाने का रास्ता खोजता है, पर अनुकूल रास्ता नहीं मिलने पर वह हिंसा का रास्ता भी चुल लेता है। इस प्रकार बाहरी परिस्थितियाँ भी हिंसा में निमित्त बन सकती हैं। मूल तो भीतर में कषाय हैं तब ये निमित्त हिंसा को जन्म देते हैं।

कहा गया है–आत्मा ही अहिंसा है और आत्मा ही हिंसा है। जो अप्रमत्त होता है वह अहिंसक होता है, जो प्रमत्त होता है वह हिंसक होता है। प्रभु या परमात्मा से प्रेम करें, उनकी भक्ति करें, यह तो अच्छी बात है पर यह भी ध्यान दें कि परिवार में, पड़ोसी से मैत्री है या नहीं? हम प्राणी मात्र के प्रति मैत्री रखें, उनमें भी अपने आस-पास रहने वालों के साथ मैत्री रखें।

दुःख हिंसा से प्रसूत होते हैं। शास्त्र में अहिंसा को भगवती कहा गया है। सब जीवों का कल्याण करने वाली यह अहिंसा भगवती माता है, जीवनदाता है। अहिंसा को सुरक्षित रखने के लिए समता आवश्यक है।

अहिंसा एक ऐसा मार्ग है जो मोक्ष तक पहुँचा सकता है। पातंजल योग दर्शन में कहा गया है कि जिस व्यक्ति के भीतर अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाती है उसकी सन्निधि पाकर दूसरे व्यक्ति का भी वैर-भाव नष्ट हो जाता है।

अहिंसा की बात हमारे जीवन में रहे। हम हमारे साध्य-मोक्ष को पाने के लिए अहिंसा रूपी शुद्ध साधना का उपयोग करें, अहिंसा के राजमार्ग पर चलने का प्रयास रखें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर अपने प्रवचन में लोगों को ऐसा अमृत प्रदान करा रहे हैं, जिस अमृत को पाकर लोगों को जीवन जीने के सूत्र प्राप्त हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति में उस जीवन को जीवन कहा जाता है, वह जीवन सुफल-सफल और सार्थक होता है, जिसमें व्यक्ति शांति का अनुभव करता है। बाह्य पदार्थों से अस्थायी शांति मिलती है। जब व्यक्ति भीतर चला जाता है, उस समय वह जो शांति प्राप्त करता है, उसका वह चिंतन भी नहीं कर सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय स्वागताध्यक्ष महेंद्र बागरेचा, तेममं ठाणा, स्थानीय विधायक निरंजन डावखेरे स्थानीय सभाध्यक्ष रमेश सोनी, रेयमंड कंपनी के संयोजक व स्थानकवासी समाज से शांतिलाल पोखरना, मूर्तिपूजक समाज से उत्तमचंद सोलंकी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सत्संगत से उत्थान और कल्याण की दिशा होती है प्रशस्त : आचार्यश्री महाश्रमण

मुलुंड, १५ जनवरी, २०२४

मुलुंड प्रवास के दूसरे दिन अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि सत्संगत शब्द चलता है। हमारे यहाँ रात्रि के कार्यक्रमों को भी इन वर्षों में सत्संगत के रूप में अभिहीत किया जाता है। सत्संगत यानी साधुजनों की संगति करना, अच्छी संगति करना। श्रमण-माहनों की उपासना करना, सत्संगत हो जाता है। अच्छे साहित्य को पढ़ना भी पठन रूप में सत्संगत हो सकती है।

प्रश्न होता है कि सत्संगति क्यों करनी चाहिए? सत्संगति से, साधुओं की संगति से पहला लाभ है कि सुनने को कुछ मिल जाए। श्रवण भी ज्ञान का अच्छा माध्यम बनता है। दशवेआलियं में कहा गया है–सुनकर व्यक्ति कल्याण को समझता है और सुनकर व्यक्ति पाप को भी समझ लेता है। ज्ञान से विज्ञान होता है, हेय-गेय का विवेचन हो जाता है। विशेष ज्ञान से विवेक होने से व्यक्ति पापों को छोड़ता है, त्याग करता है। त्याग करने से संयम होता है। संयम होने से आश्रव रूपी कर्म आने का द्वार बंद हो जाता है। फिर तपस्या से व्यवदान-निर्जरण होता है। आगे बढ़ते-बढ़ते अक्रिया की स्थिति और उसके बाद सिद्धि-निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है। इस प्रकार साधुओं की पर्युपासना से बड़ा लाभ प्राप्त हो सकता है।

आधुनिक टेक्नॉलोजी ने तो श्रवण को बहुत आसान बना दिया है। श्रवण के भी अनेकों लाभ हो सकते हैं–सावद्य कार्यों से बचा जा सकता है, सामायिक हो तो त्याग रूपी लाभ भी हो सकता है। सुनने से व्यक्ति नई जानकारियाँ प्राप्त कर सकता है, अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। सुनते-सुनते जीवन में परिवर्तन भी आ सकता है। जीवन की दशा और दिशा बदल सकती है। सुनते-सुनते वैराग्य भाव भी आ सकता है। अच्छा श्रोता एक दिन अच्छा वक्ता भी बन सकता है। हम सलक्ष्य प्रवचन सुन जीवन में उतारने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ २ पर)

✦ न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।
आचार्य श्री महाश्रमण

जीवन में समय प्रबंधन कर सदुपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण

पवई, ११ जनवरी, २०२४

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का आज मुंबई के उपनगर पवई में पदार्पण हुआ। महामनीषी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे आगमों में अध्यात्म के संदेश प्राप्त होते हैं। दर्शन-तत्त्वज्ञान की बातें भी प्राप्त होती हैं। संसार क्या है, उसके बारे में भी जानकारियाँ मिलती हैं।

श्लोक में बताया गया है कि संसार अध्रुव और अशाश्वत है। हमारा जीवन भी अध्रुव और अशाश्वत है। इस संसार में दुःख भी प्रचुर मात्रा में है। एक चिंता मिटती है तो कई बार दूसरी चिंता तैयार रहती हैं। एक के बाद एक समस्या आ जाती है। एक दिन तो हर प्राणी का जीवन समाप्ति को प्राप्त होता है। इस जीवन के बाद दुर्गति में न जाना पड़े, इसके लिए क्या करना चाहिए।

यह मनुष्य जीवन हमें प्राप्त है। यह मानव जीवन दुर्लभ बताया गया है, पर हमारे लिए तो यह उपलब्ध है। इस मानव जीवन में जो अध्यात्म की साधना की जा सकती है, अन्य किसी योनी में उतनी उत्कृष्ट साधना नहीं की जा सकती। मानव जीवन को पाकर कोई इसे पाप-भोगों में गँवा देता है, वह आदमी एक प्रकार से मूढ़-नादान होता है।

आदमी जीवन में समय का प्रबंधन कर सदुपयोग करे। अगली गति में दुर्गति न मिले इसके लिए आदमी ईमानदारी का आचरण करे। झूठी बात या झूठा आरोप न लगाए, चोरी न करे। ईमानदारी के सामने बहुत सी सुख-सुविधाएँ बहुत छोटी चीज हैं। आदमी अहिंसा के पथ पर चले। जीवन में संयम-सादगी रहे, सद्गुण रहे। धर्म की साधना में भी समय लगाएँ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि परमपूज्य आचार्यश्री को हम सभी महान यायावर के रूप में देख रहे हैं। परिव्राजक के रूप में देख रहे हैं। परिव्रजन का उद्देश्य है लोककल्याण। पंखे की तरह लोगों का परिताप का हरण कर शीत प्रवचन द्वारा जन-जन का हित कर रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में शांतिलाल कोठारी, जीतो से सुखराज नाहर, स्थानीय विधायक दिलीप लांडे ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। पवई तेरापंथ समाज की डायरेक्ट्री लोकार्पित की गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

व्यक्ति अपने आप का अभिनिग्रह करे : आचार्यश्री महाश्रमण

मुलुंड, १४ जनवरी, २०२४

अध्यात्म के अलौकिक पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी दो दिवसीय प्रवास हेतु वृहत्तर मुंबई के उपनगर मुलुंड में पधारे।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने प्रेरणा पाथेय में फरमाया कि हमारी इस दुनिया में सुख भी मिलता है तो दुःख भी प्राप्त हो जाते हैं। आदमी कभी दुःखी बन जाता है, तो कभी सुख का अनुभव भी करता है। दुःख दो प्रकार का होता है—जरा, शोक। जो शारीरिक कष्ट होते हैं, उसे जरा कहा जा सकता है। जो मानसिक संताप-दुःख होता है, वह शोक है।

आदमी दुःख से डरता भी है। भगवान महावीर ने अपने शिष्यों से पूछा कि आयुष्मन् श्रमणो! प्राणियों को किससे भय होता है? संभवतः श्रमण उत्तर नहीं दे पाए तो भगवान ने फरमाया कि ये प्राणी दुःख से भय खाते हैं। दुःख प्राणी ने स्वयं की आत्मा से ही पैदा किया है। प्रमाद से प्राणी दुःख पैदा करता है। अप्रमाद की साधना से दुखों का निर्जरण भी होता है।

शारीरिक कष्टों से भी आदमी डर सकता है। आगम में कहा गया है कि जन्म, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु भी दुःख है। संसार में अनेक दुःख हैं, जहाँ प्राणी दुःख पाते हैं।

इन दुखों से छुटकारा पाने का उपाय है कि पुरुष! अपने आपका अभिनिग्रह (संयम) करो। इस प्रकार तुम दुःख से मुक्ति पा सकते हो। अपने आप पर संयम-अनुशासन करो। हम वाणी का संयम करें, झूठ और कटु न बोलें। मन पर भी अनुशासन रखें। चिंतन सकारात्मक रहे। चिंतन से भी व्यक्ति सुखी या दुखी बन सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने फरमाया था कि समस्या और मानसिक दुःख एक नहीं है।

बाहर समस्या होने पर भी आदमी शांति में रह सकता है। मन से दुखी न बनें, समता-धैर्य रखें। गृहस्थ जीवन में समस्याएँ अनेक प्रकार की आ सकती हैं, पर समस्या का समाधान किया जा सकता है। 'चिंता नहीं चिंतन करो', व्यथा नहीं व्यवस्था करो और प्रशस्ति नहीं प्रस्तुति करो।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि यहाँ जनता आचार्यप्रवर से अमृत पाने के लिए इकट्ठी हुई है। हर व्यक्ति अमृत पा अमृत बनना चाहता है। गुरु दर्शन ही अमृत है। अमृत वही व्यक्ति दे सकता है, जो लोक-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है। जो लोक-कल्याण की भावना रखता है, वो व्यक्ति श्रेष्ठता को प्राप्त करता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में मुलुंड सभाध्यक्ष चुन्नीलाल सिंघवी, तेरापंथ महिला मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सुंदर उपवन बन जाए मानव जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

भांडुप, १३ जनवरी, २०२४

भांडुप प्रवास के दूसरे दिन अध्यात्म के उत्कृष्ट पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि पाँच आश्रवों की बात बताई गई है। जैन विद्या में जो नौ तत्त्व बताए गए हैं, उनमें एक है—आश्रव।

हमारी आत्मा संसार में परिभ्रमण करती है, उसका कारण आश्रव है। जन्म-मरण की परंपरा का हेतु आश्रव होता है। अगर प्राणी के आश्रव न रहे, तो उसी जन्म में मुक्ति हो जाती है। साधु के तो पाँच महाव्रत होते हैं, पर साधु के कई आश्रव रहते हैं। गृहस्थ भी आश्रवों से अपना बचाव करे। हिंसा, झूठ, चोरी भी आश्रव है। गृहस्थ इनसे निवृत्त होने का प्रयास करे।

अणुव्रत से अनेक जैन-अजैन लोग जुड़े हैं। हिंसा, झूठ, चोरी करना कोई धर्म नहीं कहता है। संकल्पपूर्वक हिंसा न हो। आश्रव संसार में जन्म-मरण की परंपरा को बढ़ाने वाले हैं। मनुष्य जन्म मिला है, इसमें मोक्ष जाने की तैयारी करें। यही मानव जीवन की सार्थकता है। मानव जीवन जो हमें प्राप्त है, उसका लाभ उठाएँ। सुबह-सुबह रोज एक सामायिक करने का लक्ष्य रखना अच्छी बात है।

जो धर्म करेगा उसकी आत्मा का विकास होगा। नमस्कार महामंत्र का इक्कीस बार जप तो रोज करना चाहिए। जैन धर्म में तो त्याग, संयम और तप की ही बात है। संतों की कल्याणी वाणी सुनने का प्रयास करें। साथ में यथाऔचित्य सेवा करने का प्रयास करें। मानव जीवन एक सुंदर उपवन बन जाए, जहाँ आध्यात्मिकता की फसल, फूल और फल हो। मानव जीवन सार्थक बने, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में भांडुप तेरापंथ ट्रस्ट से सुरेश कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला, कन्या मंडल एवं तेयुप की प्रस्तुति हुई व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। मूर्तिपूजक समाज से भीमराज मादरेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ५० व्यक्तियों ने समूह में महाश्रमण अष्टकम् का समुच्चारण किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सत्संगत से उत्थान और कल्याण की दिशा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साधुओं के तो दर्शन भी अपने आपमें पुण्य हैं। साधुता की मुख्य कसौटी सम्यक् ज्ञान, सम्यक्त्व और आचार है। विद्वता, वक्तृत्व आदि 'सोने पे सुहागा' वाली बात हो सकती है। साधु ज्ञानवान हो न हो, पर आचारवान तो होना ही चाहिए। साधुता की सुरक्षा करना साधु का प्रथम कर्तव्य बताया गया है। सत्संगत से उत्थान और कल्याण की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

स्थानकवासी संप्रदाय की साध्वी मीरांबाई जी और साध्वी कृष्णाबाई जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सकल मुलुंड समाज से विजय पटावरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। तेयुप सदस्यों ने गीत का संगान किया। जैविभा से सलिल लोढ़ा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला ज्ञानार्थी नव्यांग चोरड़िया ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी कलाकृति प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

परमार्थ चेतना का जागरण हमारा परम लक्ष्य है

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी का खिलौनी देवी धर्मशाला में नववर्ष के मंगलपाठ के पश्चात रोहिणी के लिए मंगल विहार हुआ। साध्वीवृंद का वीर अपार्टमेंट के जैन स्थानक में पावन पदार्पण हुआ। यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं ने भक्ति भाव के साथ साध्वीवृंद का स्वागत किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जैन संत चरैवेति-चरैवेति सूत्र के साथ चातुर्मास संपन्न होते ही अपनी विहारचर्या प्रारंभ कर देते हैं। अपनी साधना के साथ-साथ जन-जागरण का सिंहनाद करते हैं। आत्मोदय के साथ-साथ जन आत्मोदय के प्रति भी जागरूक रहते हैं। जन-जन के भीतर परमार्थ-चेतना के प्रति आकर्षण पैदा करते हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज हम विहार करते-करते बालाजी एवं वीर अपार्टमेंट में आए हैं। परमपूज्य गुरुदेव की महती कृपा कर हमें दिल्ली क्षेत्र प्रदान किया। दिल्ली के श्रावकों में श्रद्धा भक्ति एवं सेवा भावना है। संघ, संघपति के प्रति श्रद्धा भक्ति बढ़ती रहे। श्रावकपन पुष्ट होता रहे। साधना प्राणवान बने, ऐसी मैं मंगलकामना करती हूँ।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि जीवन में सफल होने का महत्त्वपूर्ण सूत्र है–समर्पण। हम अपने समर्पण से संघ की पोथी में नए नगमें लिखे। डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं का संयम करता है, वह हमेशा शांत व सुखी रहता है। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि हमें कोहिनूर हीरे की तरह मनुष्य जन्म मिला है। हमें अपने कर्तव्य से जीवन को आबदार बनाना है।

साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। अभातेममं की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष विमल बैंगानी, रतनलाल जैन, कमल बुच्चा ने अपने भावों से साध्वीवृंद का स्वागत किया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य भिक्षु युग

❑ **मुनि खेतसीजी (सतयुगी) (नाथद्वारा) दीक्षा क्रमांक २२**

मुनिश्री तप में बहुत रुचि रखते थे। उन्होंने उपवास से लेकर पाँच तक की तपस्या अनेक बार की। एक बार आठ दिन का तप किया। ऊपर में १८ दिन का तप किया, जिसमें दिन-भर में एक बार पानी पीते। अनेक बार दस प्रत्याख्यान किए। उष्णकाल में आतापना लेते। शीतकाल में शीत सहते। वे स्वाध्याय-ध्यान के रसिक थे। प्रतिदिन एक प्रहर तक खड़े रहकर स्वाध्याय ध्यान करते।

– : साभार : शासन समुद्र : –

भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस पर जप अनुष्ठान का आयोजन

राजरहाट, कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस पर जप अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथी सभा सॉल्टलेक एवं आचार्य महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन द्वारा किया गया। जप अनुष्ठान में लगभग १११ जोड़ों व सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में उपसर्गहर स्तोत्र, बीजमंत्र एवं पार्श्वनाथ मंत्रों का जप श्रद्धालुओं द्वारा स्वस्तिक आकार में बैठकर भी किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भगवान पार्श्व इस अवसर्पिणी काल के २३वें तीर्थंकर हुए हैं। भगवान महावीर ने उनके लिए 'पुरुषादानी' शब्द का प्रयोग किया है अर्थात् वे पुरुषों में श्रेष्ठ थे। राजकुमार पार्श्व अतीन्द्रिय ज्ञान के धनी थे। वे प्रारंभ से ही क्रांतिकारी थे। उन्होंने अंधविश्वास व अज्ञान पर विशेष प्रहार किया। मुनिश्री ने आगे कहा कि वर्तमान दुनिया में हिंसा, आतंक, भय, भ्रष्टाचार, अत्याचार व अराजकता का माहौल बना हुआ है ऐसी स्थिति में भगवान पार्श्व के बताए मार्ग पर विश्व चले तो अनेक वैश्विक समस्या का समाधान हो सकता है। आज भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक है। जन्म दिवस त्याग, तपस्या के द्वारा मनाना चाहिए। भगवान पार्श्व का जप करके जीवन को निर्मल व पवित्र बनाएँ।

इस अवसर पर बालमुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं, पूर्वांचल द्वारा १०८ महिलाओं के साथ भगवान पार्श्व की स्तुति गान के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

कार्यक्रम में बृहतर कोलकाता के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालुजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर अच्छी संख्या में उपवास, बेला, तेला तप के प्रत्याख्यान हुए। आवासीय अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का भी शुभारंभ हुआ। एएमएमईआरएफ के अध्यक्ष भीखमचंद पुगलिया, धर्मपत्नी सुशीला देवी पुगलिया एवं माता किरण देवी पुगलिया पौषध व्रत में जप अनुष्ठान में सम्मिलित हुए।

संस्कार हमारे जीवन की अनमोल धरोहर

चंगड़ा बांधा।

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में चंगड़ा बांधा श्रावक समाज में धार्मिकता की अद्भुत जागृति आई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि जीवन में संगति का बड़ा असर होता है। बुरी आदतें संगति से ही आती हैं। आदमी की पहचान उसकी संगति से हो जाती है। जीवन में अच्छी आदतें होनी बहुत जरूरी हैं। जीवन में अच्छे गुणों का विकास करना चाहिए। गुणों के विकास से ही जीवन का उत्थान होता है। गुण एवं अवगुण दोनों का संघर्ष हमारे जीवन में चलता रहता है। अच्छे संस्कार हमारे जीवन का सर्वांगीण विकास करते हैं। संस्कार हमारे जीवन की अनमोल धरोहर हैं। बिना संस्कार के जीवन का कोई महत्त्व नहीं है।

अच्छे संस्कारों से हमारी आदतें, व्यवहार, आचार सम्यक् बने रहते हैं। गुस्सा करने वाला व्यक्ति स्वयं का ही नुकसान करता है। गुस्से के कारण से शरीर के रसायन भी खराब हो जाते हैं। मन पर अपना कंट्रोल रखना चाहिए। मन में बुरे विचार इच्छाएँ पैदा होती रहती हैं। हमें मन का मालिक बनना है। करणीय-अकरणीय का विवेक जीवन को सफल बना देता है। हम अच्छे और बुरे पर चिंतन करें। अपनी विवेक की शक्ति को सदैव जागृत रखें।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जीवन में धर्म का बहुत महत्त्व है। धार्मिकता हमारे जीवन विकास का रास्ता खोलती है। आगमवाणी सुनने से एवं स्वाध्याय करने से हमारी चेतना जागृत होती है। जागृत चेतना वाला व्यक्ति अपने जीवन की दशा एवं दिशा दोनों को बदल देता है। जीवन में आनंद, शांति को पाना है तो अपनी गलती को देखना सीखें और उसे दूर करने का प्रयास करें। दूसरों की अच्छाई को देखकर अपने जीवन में लाने का प्रयास करें। साधु-साध्वी के सान्निध्य से प्राप्त ज्ञान को जीवन व्यवहार में लाएँ। चंगड़ा बांधा की धार्मिक भावना को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। यहाँ जितना समय दें उतना उतना कम है। युवकों ने प्रेरणा प्राप्त कर आजीवन व्यसनमुक्त एवं आजीवन सामायिक करने का नियम ग्रहण किया। श्रावक समाज में सेवा भावना बहुत है, सभी के प्रति मंगलकामना।

सामान्य धार्मिक ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथ भवन के प्रज्ञा समवसरण में मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य एवं मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के निर्देशन में श्रावक संबोध पर सीनियर ग्रुप एवं सामान्य आध्यात्मिक ज्ञान पर जूनियर ग्रुप के लिए प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें किशोर मंडल व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि ज्ञान विकास का एक श्रेष्ठतम माध्यम है–प्रतियोगिताएँ। धार्मिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान की प्रतियोगिताओं से सहज ही विकास के द्वार उद्घाटित होने लगते हैं। प्रश्नोत्तर ऐसा माध्यम है जिससे उस विषय को आसानी से समझा जा सकता है। जैन धर्म का तत्त्वज्ञान व इतिहास का ज्ञान सरल शब्दों में समझा जा सकता है। अतः प्रत्येक जिज्ञासु को अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए इस प्रकार के आयोजन में अवश्य भाग लेना चाहिए।

मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के निर्देशन में चलने वाले कार्यक्रम में सीनियर ग्रुप में प्रेरणा बांठिया व गरिमा बोथरा प्रथम रहे। तथा जूनियर ग्रुप में जयेश छाजेड़ नुपूर नाहर व शुभम जैन प्रथम रहे। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के मंत्री रतन छल्लाणी, तेयुप के अध्यक्ष अरुण नाहटा, मंत्री भरत गोलछा, किशोर मंडल के संयोजक नीरज बोथरा उपस्थित रहे।

व्यवस्था का दायित्व ऋषभ लालाणी, देवेंद्र डागा, विपिन बोथरा ने निभाया। मंच संचालन ज्ञानशाला प्रभारी चैतन्य रांका व कुलदीप छाजेड़ ने किया। तेरापंथी सभा एवं तेयुप की ओर से प्रथम स्थान तथा द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया एवं सभी प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२३

जलगाँव।

तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में संपूर्ण भारत एवं विदेशों में एक साथ आयोजित ज्ञानशाला की मौखिक परीक्षा जलगाँव में भी सुचारु ढंग से संपन्न हुई। कुल ४६ बच्चों ने परीक्षा में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

प्रश्न पत्र खोलते समय शेष महाराष्ट्र के आंचलिक संयोजक राजकुमार सेठिया, मंत्री नीरज समदरिया, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया एवं ज्ञानार्थी बच्चों की परीक्षा लेने के लिए आमंत्रित किए गए सदस्य अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य एवं महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष नम्रता सेठिया, पूर्व अध्यक्ष मीनाक्षी देवी बैद, कन्या मंडल प्रभारी मंजुषा डोसी, कन्या मंडल संयोजिका खुशबू दुगड़, मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदरिया सहित अनेक जन उपस्थित रहे।

✦ समता की साधना जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी होती है। समता धर्म है और विषमता पाप है।

आचार्य श्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

माँ का दिशाबोध-बेटी की उड़ान कार्यशाला का आयोजन

लाडनूं।

अभातेममं के निर्देशानुसार लाडनूं तेममं के तत्त्वावधान में 'माँ का दिशाबोध-बेटी की उड़ान' कार्यशाला का आयोजन साध्वी स्वस्तिकप्रभा जी के सान्निध्य में महिला मंडल भवन में रखा गया। साध्वी स्वस्तिकप्रभा जी के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

उपमंत्री राजश्री भूतोड़िया ने मंगलाचरण के रूप में माँ बेटी के रिश्ते पर आधारित कविता प्रस्तुत की। तत्पश्चात उपाध्यक्ष सुमन बैद ने स्वागत भाषण द्वारा सभी का स्वागत किया। साध्वी स्वस्तिकप्रभा जी ने शासनमाता को याद करते हुए एक कहानी के द्वारा माँ बेटी के रिश्ते को समझाया।

साध्वी नव्यप्रभा जी ने माँ बेटी के रिश्ते को एक अनोखा रिश्ता बताया। कार्यशाला की विशिष्ट अतिथि सुप्रिया कलेर उपखंड अधिकारी लाडनूं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति में कहा कि मेरा पहला अवसर है महिला मंडल के कार्यक्रम में आने का और उन्होंने मुझे सम्मान दिया उसके लिए धन्यवाद।

लाडनूं में स्थित जैन विश्व भारती की निर्देशक विजय जैन, विमल विद्या विहार सीनियर सैकंडरी विद्यालय की वाइस प्रिंसिपल चांद किरण शेखावत, तेममं कार्यसमिति सदस्य सुमन नाहटा, नीता नाहर, समता बोकड़िया एवं साक्षी कोचर ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मंत्री राज कोचर ने माँ की शारीरिक रचना द्वारा कार्य बताते हुए रोचक प्रस्तुति दी। जैन विद्या प्रभारी, लाडनूं किरण बरमेचा को उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए समण संस्कृति संकाय द्वारा प्रदत्त शील्ड प्रदान की गई। कार्यशाला का संचालन उपमंत्री राजश्री भूतोड़िया ने किया एवं आभार कोषाध्यक्ष हेमा मोदी ने किया। कार्यशाला में कन्या मंडल की कन्याओं की भी सहभागिता सराहनीय रही।

कार्यशाला में लिखित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिनके जज रहे जैन विश्व भारती निर्देशक विजय जैन एवं विमल विद्या विहार सीनियर सैकेंडरी विद्यालय की वाइस प्रिंसिपल चांद किरण शेखावत। १३ माँ-बेटियों की जोड़ी ने अपनी प्रस्तुति प्रदान की। सभी जोड़ियों को अलग-अलग नाम प्रदान किए गए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रही (नानकी) श्वेता-भाग्यश्री बैंगाणी, द्वितीय स्थान पर (पीहू) अंजू-प्रीति बोकड़िया रही एवं तृतीय स्थान पर (राजकुमारी) ज्योति-भव्या कठोतिया रही।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ कन्या मंडल, लाडनूं द्वारा कला स्पर्श दिसंबर माह की कार्यशाला के अंतर्गत रोल मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, उसमें ७ कन्याओं ने भाग लिया। उसके पारितोषिक भी कार्यशाला में प्रदान किए गए। कार्यशाला में तेममं के पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य, अन्य सदस्य, कन्या मंडल की प्रभारी एवं कन्या मंडल की कन्याओं की उपस्थिति रही।

तिरुवन्नामलाई।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'माँ का दिशाबोध-बेटी की उड़ान' कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से हुआ। अध्यक्ष संतोष बाई सेठिया ने सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात मंत्री दीपिका सेठिया ने संयोजन किया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि हमारी बेटियाँ हर दिशा में उड़ान कर रही हैं। माँ माली है, शिक्षक है, संरक्षक हैं, ममता है, बच्चों के जीवन की प्रथम पाठशाला है। माँ का जैसा संकल्प होता है, उसी रूप में माँ अपने बच्चों को आकार में ढाल सकती है। माता का अति प्यार वर्तमान में बेटियों की समस्या बनती जा रही है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि दुनिया में अनेक रिश्ते हैं, उसमें महत्त्वपूर्ण रिश्ता है माँ-बेटी का, माँ ममता का महाकाव्य है। आस्था का अक्षरधाम है, तो बेटी चिड़ियों की चहक है, फूलों की महक है, यह प्यार, ममत्व, स्नेह का संबंध है। साध्वी मेरूप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। नैना सेठिया ने आभार ज्ञापन किया।

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में 'माँ का दिशाबोध-बेटी की उड़ान' कार्यशाला का आयोजन तेममं द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी प्रज्ञाप्रभा जी द्वारा मधुर गीतिका से किया गया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि बेटियाँ भार नहीं बल्कि कुदरत का एक ऐसा अनमोल उपहार होती हैं, जो की माँ के लिए खुशियों का बेहतर संसार होती हैं, तो माँ हर बेटी की जिंदगी में कामयाबियों की उड़ान भरने का एवं परेशानियों से मुकाबला करने का मजबूत आधार होती है।

साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा कि माँ बेटी का रिश्ता अटूट रिश्ता है। माँ ममता और क्षमता की मूरत होती है, बेटी को अच्छे संस्कार एवं अच्छे कैरियर के लिए तैयार करती है। गुलाब देवी बैद, किरण देवी धारीवाल, सुमन देवी सेठिया, सुनीता देवी कोचर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। शैली धारीवाल, गर्वित धारीवाल, प्रांजल सेठिया, तनिष्का भंडारी, राजेंद्र फुलफगर, ताराचंद धारीवाल तथा निर्णायक संतोष देवी भंसाली एवं सरोज देवी सेठिया ने भी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री पूजा सेठिया ने किया। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष श्वेता भंडारी ने किया।

दीक्षा कल्याण महोत्सव का आयोजन

कोयंबदूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में शृंखलाबद्ध एकलठाणा तप की भेंट के अंतर्गत कोयंबदूर तेममं ने तप यज्ञ का आयोजन किया। १० प्रत्याख्यान में पाँचवें क्रम का तप है–एकलठाणा। इसमें आहार ग्रहण करने की अवधि एक मुहूर्त यानी ४८ मिनट से अधिक नहीं हो सकती हैं एकलठाणा में एक स्थान पर बैठकर एक आसन में खाद्य पदार्थ एक बार में ही थाली में लेकर मौनपूर्वक आहार किया जाता है।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। स्थानीय अध्यक्ष मंजु सेठिया ने सभी तपस्वियों का स्वागत व अभिनंदन किया। उपासिका ललिता बरलोटा व सुशीला बाफना ने सबको एकलठाणा का प्रत्याख्यान करवाया व मंगलपाठ सुनाया। सभी संस्थाओं के ८७ सदस्यों ने इस तप की कड़ी में जुड़कर अपने आराध्य की आराधना की।

--: संक्षिप्त समाचार :--

सेवा कार्य

बेहाला।

तेयुप, बेहाला द्वारा जरूरतमंदों के लिए कंबल का वितरण कर सेवा कार्य किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ सेवा कार्य का शुभारंभ किया गया।

तेयुप, बेहाला के कई सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस सेवा कार्य के लिए समाज से कुल २५० कंबल के लिए अनुदान प्राप्त हुआ।

लिलुआ।

तेयुप, लिलुआ द्वारा बच्चों के लिए पौष्टिक आहार का सेवा कार्य का आयोजन बेलूड़ स्थित लाल बाबा आश्रम में किया गया। कार्यक्रम नवकार मंत्र के संगान से आरंभ किया गया। परिषद के मंत्री दीपक बागरेचा ने दानदाता ओर संयोजक जयंत घोड़ावत के प्रति आभार व्यक्त किया एवं साधुवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में तेयुप संगठन मंत्री मानव बैद, कार्यकारिणी सदस्य आशीष चौपड़ा आदि उपस्थित रहे।

प्रभु पार्श्व प्रणति दिवस पर जप अनुष्ठान

अमराईवाड़ी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस पर मुनि सुव्रत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में जप अनुष्ठान के साथ सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया।

राजाजीनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित प्रभु पार्श्वनाथ भगवान जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में श्रावक समाज द्वारा भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में उपसर्गहर स्तोत्र जप एवं सामायिक की गई।

इस अवसर पर राजाजीनगर के श्रावक समाज एवं तेयुप सदस्यों ने उपवास, एकासन, जप सहित सामायिक एवं रात्रि भोजन त्याग में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

अभिनव सामायिक का आयोजन

धुबरी।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल उत्सव विश्व मैत्री का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में सामायिक हुई। तेयुप अध्यक्ष शीतल कुमार बुच्चा ने बताया कि अभातेयुप की ३५८ शाखाएँ पूरे देश व नेपाल में नववर्ष के प्रथम रविवार को सामायिक फेस्टिवल का आयोजन करवाती हैं।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने बताया किया जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है।

ज्ञान को विकासशील बनाने का सशक्त माध्यम है परीक्षा

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला परीक्षा शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ तक का आयोजन किया गया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि परीक्षा ज्ञान को पक्का एवं ज्ञान को विकासशील बनाने में एक सशक्त माध्यम है। बच्चों को बिना नकल के दत्तचित्त होकर परीक्षा देने की प्रेरणा दी। परीक्षा के पेपर सभा अध्यक्ष ताराचंद धारीवाल, मंत्री विकास सेठिया, ज्ञानशाला संयोजिका मंजु देवी फुलफगर की उपस्थिति में परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक कुसुम देवी बेताला द्वारा खोले गए।

मंगलपाठ से बच्चों की ज्ञानशाला परीक्षा का शुभारंभ हुआ। गुलाबदेवी वेद एवं संतोष देवी भंसाली का अच्छा सहयोग रहा। बच्चों की उपस्थिति सराहनीय रही।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु की तपोभूमि-निर्वाण भूमि में 'चित्त समाधि शिविर' का आयोजन किया गया। सिरियारी संस्थान द्वारा शासनश्री मुनि मणिलालजी एवं मुनि मुनिव्रतजी के सान्निध्य में आयोजित पंचदिवसीय शिविर समाज के वरिष्ठ वर्ग के लिए रखा गया था। भक्तामर, प्रार्थना, वृहद् मंगलपाठ, योगासन एवं प्रवचन शिविर के नियमित क्रम थे।

पाँचों ही दिन प्रवचन का नियमित क्रम रहा। शासनश्री मुनिव्रत जी स्वामी ने आगम श्लोक व रोचक दृष्टांत के माध्यम से व अपनी अनुभव की वाणी से जनता को लाभान्वित किया। मुनि धर्मेश कुमार जी ने प्रतिदिन एक घंटा प्रेक्षाध्यान करवाया, जिससे शिविर प्रतिभागियों ने स्वयं को देखने का प्रयास किया व कषाय विजय की साधना की।

मुनि विनीत कुमार जी ने समसामायिक विषयों पर चर्चा करते हुए परिवार में सामंजस्य एवं संस्कार पर प्रकाश डाला। मुनि आकाश कुमार जी ने कथा के माध्यम से जिन शासन की महिमा का बखान किया। मुनि हितेंद्र जी ने अंग्रेजी अक्षरों के माध्यम से शिविरार्थियों को समझाया व संयोजन का निर्वहन भी किया। कार्यक्रम के व्यवस्थित आयोजन में विजय जैन व प्रवीण ओस्तवाल का विशेष योगदान रहा।

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह

दीक्षा का मार्ग कर्म मुक्ति एवं मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है

उधना।

अडसीपुरा ग्राम निवासी एवं पांडेसरा, उधना प्रवासी प्रकाश चिप्पड़ के सुपुत्र दीक्षार्थी मुकेश कुमार ३१ जनवरी, २०२४ को मुंबई में महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के करकमलों द्वारा जैन भगवती दीक्षा अंगीकार करने जा रहे हैं। इस सदर्भ में शासनश्री साध्वी मधुबाला जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी का मंगलभावना समारोह तेरापंथ भवन, उधना में आयोजित किया गया। इससे पूर्व पांडेसरा तेरापंथ जैन समाज एवं तेरापंथ सभा, उधना के तत्त्वावधान में विशाल शोभायात्रा आयोजित हुई, जिसमें समाज की विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता एवं विशाल श्रावक समुदाय उपस्थित रहा। शोभायात्रा पांडेसरा से प्रारंभ होकर शुभ रेजिडेंसी हरी नगर आचार्य तुलसी सर्किल होते हुए तेरापंथ भवन, उधना पहुँची।

इस अवसर पर साध्वी मधुबाला जी ने कहा कि यह संसार दुःख बहुल संसार है। जन्म दुःख है, मृत्यु दुःख है, बुढ़ापे में भी दुःख होता है। रोग और बीमारी से आदमी ग्रस्त हो जाता है तब भी दुःख होता है। इस संसार में कदम-कदम पर दुःख है। फिर भी जब संसार छोड़कर संन्यास लेने की बात आती है तब लाखों में कोई एक तैयार होता है। संसार का मार्ग कर्म बंधन का मार्ग है, जबकि दीक्षा का मार्ग कर्म मुक्ति का मार्ग है। कर्म मुक्ति होते ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सुलभ बन जाता है। दीक्षार्थी मुमुक्षु मुकेश का निर्णय अत्यंत समझदारी का निर्णय है, अपने निर्णय के लिए मुमुक्षु मुकेश अभिनंदन के पात्र हैं। लेकिन उसके साथ-साथ दीक्षा के लिए आज्ञा देने वाले उनकी माता सुशीलादेवी और पिता प्रकाश भी अभिनंदन के अधिकारी हैं। उन्होंने कहा कि साधु जीवन की सफलता के पाँच सूत्र हैं–सहिष्णुता, सेवा,श्रम, विनय और प्रमोद भावना।

साध्वी विज्ञानश्री जी ने कहा कि जैन दीक्षा अंतर जगत की यात्रा का शुभारंभ है। आसक्ति से अनासक्ति की ओर जाने का मार्ग है। साध्वी सौभाग्यश्री जी ने कहा कि मुमुक्षु मुकेश कुमार ने संयम का पथ अपनाया है। संयम का पथ अपनाने वाला व्यक्ति स्वयं तो भवसागर तर ही जाता है, लेकिन दूसरों को भी तरने में सहयोगी बनता है।

साध्वी मंजुलयशा जी ने कहा कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है। उसे व्यर्थ में गँवाना नहीं चाहिए। दीक्षा तो मनुष्य जीवन का सार है, संयम द्वारा जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग है। कोई अन्न दान करता है, कोई धन-दान करता है, कोई स्थान दान करता है, लेकिन पुत्र का दान करना बहुत मुश्किल है। सुश्रावक प्रकाश के चार पुत्रियाँ और एक ही पुत्र है। अपने इकलौते पुत्र को संघ में दान देकर श्रावक पिता प्रकाश और माता सुशीलादेवी ने जो समर्पण किया है वह अनुमोदनीय है। उनके जीवन से अन्य लोग भी प्रेरणा लें, यह अपेक्षित है।

दीक्षार्थी मुमुक्षु मुकेश कुमार ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा लिखित पुस्तक 'संबोधि' का अध्ययन-स्वाध्याय करते-करते मेरे जीवन में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हुए। मेरे वैराग्य को पुष्ट करने में मेरे माता-पिता, परिवारजन, भाई प्रवीण मेडतवाल आदि योगभूत बने हैं। मैं पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ हूँ, मुझे गुरुदेव के करकमलों द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। यह मेरा अहोभाग्य है। मैं जीवन की अंतिम सांस तक धर्मशासन की सेवा करता रहूँ, यही अभ्यर्थना है।

स्वागत वक्तव्य में तेरापंथी सभा, उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने कहा कि उधना क्षेत्र से इससे पूर्व तीन दीक्षाएँ हो चुकी हैं। यह चौथा पुष्प धर्मशासन को अर्पित हो रहा है, जिसका हमें गर्व है। उधना भजन मंडली ने मंगलाचरण किया। तेमम द्वारा अनुमोदन आरती हुई। महिला मंडल अध्यक्ष सोनू बाफना, तेयुप अध्यक्ष हेमंत डांगी, सूरत सभा के मंत्री मुकेश बैद, महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया, अणुविभा गुजरात प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, अभातेयुप से अर्पित नाहर, मुमुक्षु की बहनें, श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी श्रमण संघ के मंत्री राजूभाई दाणी, सभा संरक्षक पारस बाफना, उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल, परिवारजनों की ओर से विनोद डांगी, तूलिका डांगी आदि ने मंगलभावनाएँ प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में स्थानकवासी जैन समाज के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्य विशाल संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, उधना के सहमंत्री पुखराज हिरण ने किया। मोहन पोरवाड़ एवं सभा के पूर्व एवं वर्तमान पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं द्वारा दीक्षार्थी का सम्मान किया गया एवं अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा-२०२३ का आयोजन

कोलकाता।

वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल में १६ केंद्रों में शिशु संस्कार की परीक्षा हुई। उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, दक्षिण कोलकाता, मध्य-उत्तर कोलकाता, टॉलीगंज, बेलडांगा, सॉल्टलेक, पूर्वांचल, उत्तर कोलकाता, लिलुआ, एक्टिव एकर, बाली बेलूर, उत्तरपाड़ा, हिंदमोटर, सिरसा, सैंथिया, बेहाला, बरहमपुर, दुर्गापुर–इन सभी क्षेत्रों में परीक्षा हुई। सभी ने पूर्ण प्रामाणिकता के साथ पेपर खोले। स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री अपनी टीम के साथ उपस्थित थे।

आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया स्वयं कुछ सेंटर में उपस्थित रही। कोलकाता में ५३२ बच्चों ने शिशु संस्कार की परीक्षा दी।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

पचपदरा निवासी, सूरत प्रवासी भंवरलाल बालर मेहता के सुपुत्र पारस बालर मेहता के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किए। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी प्रकाश डाकलिया के सुपुत्र ऋषभ-गरिमा डागलिया के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा, कांतिभाई मेहता, सुशील गुलगुलिया, मिठालाल भोगर, मनीष कुमार मालू, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेरापंथ महासभा, अभातेयुप, तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत, टीपीएफ के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

गंगाशहर।

भीनासर निवासी, गुवाहाटी प्रवासी संतोष देवी बसंत पटवा के सुपुत्र एवं पुत्रवधू रौनक-प्रेरणा पटवा के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक रतनलाल छल्लाणी, विनीत बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

जैन संस्कारक रतनलाल छल्लाणी ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

अमराईवाडी-ओढव।

विशाल सिंघवी की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश टुकलिया एवं पंकज डांगी ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर अमराईवाडी महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने संस्कारकों के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। तेयुप, अमराईवाडी की ओर से सिंघवी परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

प्रभु पार्श्व प्रणति जप अनुष्ठान का आयोजन

उधना।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, उधना द्वारा २३वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याण महोत्सव पर जप अनुष्ठान एवं सामायिक का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासक झवरीमल दुगड़ एवं डॉ० मुकेश दाजेड़ द्वारा जप अनुष्ठान करवाया गया। तेयुप मंत्री विकास कोठारी ने कार्यक्रम के संयोजक चंद्रेश लोढ़ा एवं मनोज बाबेल का आभार व्यक्त किया।

तेयुप सदस्यों द्वारा उपवास एवं एकासन किए गए। कार्यक्रम में उधना सभा, महिला मंडल, तेयुप, अभातेयुप सदस्य, किशोर मंडल एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में संयोजक मनोज बाबेल ने दोनों उपासक एवं पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

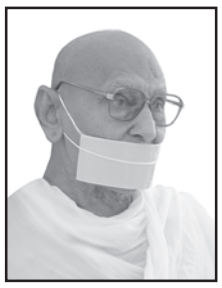

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

बारह भावनाएँ

(१२) बोधि-दुर्लभ भावना–मनुष्य का जन्म दुर्लभ है और बोधि उससे अधिक दुर्लभ है। मौनीज यहूदी संत के मृत्यु की सन्निकट वेला थी। पुरोहित पास में खड़ा मंत्र पढ़ रहा था। उसने कहा–'मूसा का स्मरण करो, यह अंतिम क्षण है।' मौनीज ने आँखें खोली और कहा, 'हटो यहाँ से। मेरे सामने नाम मत लो मूसा का।' पुरोहित को आश्चर्य हुआ, सब देखते रहे, यह कैसी बात? पुरोहित ने कहा–'जीवन भर जिनका गीत गुनगुनाया, हजारों लोगों को संदेश दिया और अब यह क्या कह रहे हो? जिंदगी की सारी प्रतिष्ठा धूल में मिला रहे हो?' मैनीज ने कहा, 'मैं जानता हूँ। किंतु अभी प्रश्न वैयक्तिक है। मूसा यह नहीं पूछेगा कि तुम मूसा क्यों नहीं हुए। वह पूछेगा कि तुम मौनीज क्यों नहीं हुए? स्वयं का होना बोधि है। जीवन में सब कुछ पाकर भी जिसने बोधि नहीं पाई, उसने कुछ नहीं पाया और बोधि पाकर जिसने कुछ नहीं पाया उसने सब कुछ पा लिया। मरने के बाद सब कुछ छूट जाता है, खो जाता है, वह हमारी अपनी संपत्ति नहीं है। संबोधि अपनी संपत्ति है, उसे खोजना है। अनेक-अनेक योनियों में पैदा हुए और मरे, किंतु स्वयं के अस्तित्व को नहीं पहचाना। जन्म के पूर्व और मरने के बाद भी जिसका अस्तित्व अखंड रहता है, उसकी खोज में निकलना बोधि भावना का अभिप्राय है। आचार्य शुभचंद्र ने लिखा है–'भावनाओं में रमण करता हुआ साधक इसी जीवन में दिव्य मुक्तानंद का स्पर्श कर लेता है। कषायाग्नि शांत हो जाती है, पर-द्रव्यों के प्रति जो आसक्ति है वह नष्ट हो जाती है, अज्ञान का उन्मूलन होता है और हृदय में बोध-प्रदीप प्रज्वलित हो जाता है।'

बारह भावनाओं के अतिरिक्त चार भावनाओं का और उल्लेख मिलता है। वे है–(१) मैत्री, (२) प्रमोद, (३) करुणा, (४) उपेक्षा। बुद्ध ने इन चारों को 'ब्रह्म विहार' कहा है। पतंजलि ने–**'मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्य-विषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।'** सुख, दुःख, पुण्य और पाप–इन भावों के प्रति क्रमशः मित्रता, करुणा, आनंद, प्रसन्नता और उपेक्षा का भाव धारण करने से चित्त प्रसन्न होता है, ऐसा कहा है।

(१) मैत्री भावना–मनुष्य के ज्ञात संबंधों की कड़ी बहुत छोड़ी है और अज्ञात की शृंखला बहुत प्रलंब है। ज्ञात स्पष्ट है और अज्ञात अस्पष्ट, इसलिए शत्रु-मित्र आदि की कल्पनाएँ खड़ी होती हैं। अज्ञात सामने आ जाए तो ये भाव स्वतः शांत हो सकते हैं। जन्म-मृत्यु की लंबी परंपरा कौन अपरिचित है? किंतु इसे साधारण लोग नहीं समझते। साधक आत्म-तुला के पथ पर अग्रसर होता है, उसे यह स्पष्ट हो जाए तो बहुत अच्छा है, किंतु बहुत कम व्यक्तियों को अतीत ज्ञात होता है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि मैं पहले भी था, अब भी हूँ और आगे भी रहूँगा। अतीत में था तो कहाँ था, कौन मेरे संबंधी थे, आदि प्रश्न स्वतः खड़े हो जाते हैं। इस दृष्टि से साधक का मन सबके प्रति मित्रभाव धारण कर लेता है। **'मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई'**–मेरा सबके साथ मैत्री-भाव है। कोई मेरा शत्रु नहीं है।' अंतश्चेतना से जैसे-जैसे यह भाव पुष्ट होता जाता है वैसे-वैसे साधक के मन में शत्रुता का भाव नष्ट होता जाता है। मित्र-मन सर्वत्र प्रसन्न रहता है और अमित्र-मन अप्रसन्न। शत्रु-मन अशांत, हिंसक, घृणायुक्त और क्लिष्ट रहता है। उसमें प्रतिशोध की आग निरंतर प्रज्वलित रहती है। मित्र-मन में ये सब दोष नष्ट हो जाते हैं। उसे भय नहीं रहता।

मैत्री-भावना का साधक स्वयं अपने को कष्ट में डाल सकता है, किंतु दूसरों को कष्ट नहीं देता। उसकी दृष्टि में पर-शत्रु जैसा कोई रहता ही नहीं। शत्रु का भाव ही अनिष्ट करता है। खलीफा अली अपने शत्रु के साथ वर्षों लड़ता रहा। एक दिन शत्रु हाथ में आ गया। उसकी छाती पर बैठ भाला मारने वाला ही था, इतने में शत्रु ने मुँह पर थूक दिया। अली को एक क्षण गुस्सा आया और बोला–'आज नहीं लड़ेंगे।' लोगों ने कहा, 'कैसी मूर्खता कर रहे हैं?' वर्षों से शत्रु हाथ आया और आप छोड़ रहे हैं।' अली ने कहा–'कुरान का वचन है–क्रोध में मत लड़ो।' मुझे गुस्सा आ गया। शत्रु को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा–'इतने वर्षों क्या आप बिना क्रोध के लड़ रहे थे?' अली ने उत्तर दिया–'हाँ'। शत्रु चरणों में गिर पढ़ा। उसे पता ही आज चला कि बिना क्रोध के भी लड़ा जा सकता है। वह मित्र हो गया। लड़ने का हेतु भिन्न हो सकता है, किंतु क्रोध में नहीं लड़ना–यह मित्रता का परिचायक है। मैत्रीभाव का विराट् रूप जब सामने आता है तब द्वैत नहीं रहता। **'आयतुले पयासु'**–प्राणियों को अपने समान देखो–यह उसका फलितार्थ है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

जन्म

सब दिशाएँ सौम्य और आलोक से पूर्ण हैं। वासंती पवन मंद-मंद गति से प्रवाहित हो रहा है। पुष्पित उपवन वसंत के अस्तित्व की उद्घोषणा कर रहे हैं। जलाशय प्रसन्न हैं। प्रफुल्ल हैं भूमि और आकाश। धान्य की समृद्धि से समूचा जनपद हर्ष-विभोर हो उठा है। इस प्रसन्न वातावरण में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्यरात्रि को एक शिशु ने जन्म लिया।

यह विक्रम पूर्व ५४२ और ईसा पूर्व ५६९ की घटना है।

जनपद का नाम विदेह। नगर का नाम क्षत्रियकुंड। पिता का नाम सिद्धार्थ। माता का नाम त्रिशला। शिशु अभी अनाम।

वह दासप्रथा का युग था। प्रियंवदा दासी ने सिद्धार्थ को पुत्र-जन्म की सूचना दी। सिद्धार्थ यह सूचना पा हर्ष-विभोर हो उठे। उन्होंने प्रियंवदा को प्रीतिदान दिया और सदा के लिए दासी-कर्म से मुक्त कर दिया। दास-प्रथा के उन्मूलन में यह था शिशु का पहला अभियान।

सिद्धार्थ ने नगर रक्षक को बुलाकर कहा, 'देवानुप्रिय! पुत्ररत्न का जन्म हुआ है। उसकी खुशी में उत्सव का आयोजन करो।'

नगर-रक्षक महाराज सिद्धार्थ की आज्ञा को शिरोधार्य कर चला गया।

आज बंदीगृह खाली हो रहे हैं। बंदी अपने-अपने घरों को लौट रहे हैं। ऐसा लग रहा है मानो स्वतंत्रता के सेनानी ने जन्म लेते ही पहला प्रहार उन गृहों पर किया है, जहाँ बुराई को नहीं किंतु मनुष्य को बंदी बनाया जाता है।

आज बाजारों में भीड़ उमड़ रही है। अनाज, किराना, घी और तेल-सब सस्ते भावों में बिक रहे हैं। ऐसा लग रहा है मानो असंग्रह के पुरस्कर्ता ने संग्रह को चुनौती दे डाली है।

आज नगर के राजपथों, तिराहों, चौराहों और छोटे-बड़े सभी पथों पर जल छिड़का जा रहा है। ऐसा लग रहा है मानो शांति का पुरोधा भूमि का ताप हरण कर मानव-संतान के हरण की सूचना दे रहा है।

आज अट्टालिका के हर शिखर पर ध्वजा और पताकाएँ फहरा रही हैं। ऐसा लग रहा है मानो जीवन-संग्राम में प्राप्त होने वाली सफलता विजय का उल्लास मना रही है।

आज नगर के कण-कण में सुगंध फूट रही है। सारा नगर गंधगुटिका जैसा प्रतीत हो रहा है। मानो वह बता रहा है कि संयम के संवाहक की दिग्दिगंत में ऐसी ही सुगंध फूटेगी।

नगरवासियों के मन में कुतूहल है। स्थान-स्थान पर एक प्रश्न पूछा जा रहा है–आज यह क्या हो रहा है? क्यों हो रहा है? क्या कोई नई उपलब्धि हुई है।

इन जिज्ञासाओं के उभरते स्वरों के बीच राज्याधिकारियों ने समूचे नगर में यह सूचना प्रसारित की, 'महाराज सिद्धार्थ के आज पुत्र-रत्न का जन्म हुआ है।' इस संवाद के साथ समूचा नगर हर्षोत्फुल्ल हो गया।

नामकरण

समय की सुई अविराम गति से घूम रही है। उसने हर प्राणी को पल-पल के संचय को सींचा है। गर्भ को जन्म, जन्म-प्राप्त को बालक, बालक को युवा, युवा को प्रौढ़, प्रौढ़ को वृद्ध और वृद्ध को मृत्यु की गोद में सुलाकर वह निष्काम कर्म का जीवित उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। उसने त्रिशला के शिशु को बढ़ने का अवसर दिया। वह आज बारह दिन का हो रहा है। वह अभी अनाम है। जो इस दुनिया में आता है, वह अनाम ही आता है। पहली पीढ़ी के लोग पहचान के लिए उसमें नाम आरोपित करते हैं। जीव सूक्ष्म है। उसे पहचाना नहीं जा सकता। उसकी पहचान के दो माध्यम हैं–रूप और नाम। वह रूप को अव्यक्त जगत् से लेकर आता है और नाम व्यक्त जगत् में आने पर आरोपित होता है। माता-पिता ने आगंतुक अतिथियों और संबंधियों से कहा, 'जिस दिन यह शिशु गर्भ में आया, उसी दिन हमारा राज्य धन-धान्य, सोना-चाँदी, मणि-मुक्ता, कोश-कोष्ठागार, बल-वाहन से बढ़ा है, इसलिए हम चाहते हैं कि इस शिशु का नाम 'वर्द्धमान' रखा जाए। हम सोचते हैं, आप इस प्रस्ताव से अवश्य सहमत होंगे।

उपस्थित लोगों ने सिद्धार्थ और त्रिशला के प्रस्ताव का एक स्वर से समर्थन किया। शिशु का नाम वर्द्धमान हो गया। 'वर्द्धमान', 'सिद्धार्थ' और 'त्रिशला' के जयघोष के साथ नामकरण संस्कार संपन्न हुआ।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

अमूर्त का साक्षात्कार

नौ तत्त्व, छः काय आदि को समझना और तदुपयुक्त आचार को पालना धार्मिक व्यक्ति के लिए, श्रावक के लिए अपेक्षित है। दोहों में मधुर प्रेरणा दी गई है–

जीवाजीव जाण्या नहीं, नहिं जाणी छह काय।
सूनै घर रा पावणा, ज्यूं आया त्यूं जाय।।

जीवाजीव जाण्या सही, सही जाणी छह काय।
बस्तै घर रा पावणा, मीठा भोजन खाय।।

जीव, अजीव, छह कार्य को न जानने वाला और अहिंसा का आचरण न करने वाला मनुष्य उस मेहमान के समान है जो शून्य घर में जाकर आतिथ्य प्राप्त करना चाहता है और जीव, अजीव, छह काय को समझने वाला उस व्यक्ति के समान है जो अपने स्नेही जनों से भरे घर में मेहमान बनता है।

अधिगमज सम्यक् दर्शन की प्राप्ति के लिए नौ तत्त्वों को समझना भी व्यावहारिक स्तर की कसौटी के रूप में माना जाता है। सम्यक् दर्शन के अभाव में कोरा क्रियात्मक आचार बहुत कल्याणकारी नहीं होता। प्रज्ञापुरुष श्रीमज्जयाचार्य के ये उद्गार स्पष्ट उद्घोषणा करते हैं–

जे समकित बिण म्हैं, चारित्र नीं किरिया रे।
बार अनंत करी, पिण काज न सरिया रे।।
भावै भावना।।
हिव समकित चारित दोनूं गुण पायो रे।
वेदण समपणै, सह्यां लाभ सवायो रे।।
भावै भावना।।

हमने सम्यक्त्व के बिना कितनी बार चारित्र-क्रिया पाल ली होगी, परंतु उससे काज (प्रयोजन) सिद्ध नहीं हुआ। अब सम्यक्त्व और चारित्र दोनों गुणों की प्राप्त हुई है। समता से वेदना को सहने से सवाया लाभ हो सकता है, संवर के साथ विशेष निर्जरा भी हो सकती है।

तत्त्व का अर्थ है पदार्थ, पारमार्थिक वस्तु या सत्। जो है वह तत्त्व है। नौ तत्त्वों में पाँच जीव और चार अजीव हैं। जीव, आश्रव, संवर, निर्जरा और मोक्ष को जीव माना गया है। आश्रव के विषय में मतभेद भी है। परंतु वह यहाँ चर्चनीय नहीं है। अजीव, पुण्य, पाप और बंध को अजीव माना गया है।

जीव आदि पाँचों अमूर्त्त (अरूपी) हैं। पुण्य, पाप और बंध मूर्त्त (रूपी) है। अजीव मूर्त्त, अमूर्त्त दोनों हैं।

जीव अमूर्त है फिर भी उसका साक्षात्कार किया जा सकता है। आँखों से तो अमूर्त्त क्या, कुछ मूर्त्त पदार्थ भी नहीं देखे जा सकते।

संन्यासी ने आत्मा के बारे में विशद व्याख्या की। प्रवचन के बाद एक युवक बोला–बाबा! मैं यों आत्मा को नहीं मान सकता। मुझे तो आप आत्मा को हाथ में लेकर दिखाओ, तभी उसे मान सकता हूँ।

संन्यासी ने युक्ति-बल का उपयोग करते हुए कहा–क्या तुमने कभी सपना देखा है?

हाँ, महाराज! गत रात में ही एक सुंदर सपना देखा है।

वह सपना मुझे हाथ में लेकर दिखाओ तो मैं मानूँ कि तुमने सपना देखा है–संन्यासी ने कहा।

युवक का प्रश्न समाहित हो गया। न सपने को हाथ में लेकर दिखाया जा सकता है और न ही आत्मा को। जीव वह है जिसमें चैतन्य है, जानने की प्रवृत्ति है, अनुभव है। जीव के मुख्य दो भेद हैं–सिद्ध और संसारी। जो जीव कर्मरहित, अशरीर, अवाक्, अमन और जन्म-मरण की परंपरा से सर्वथा मुक्त हो लोकाग्र में स्थित होते हैं वे सिद्ध जीव कहलाते हैं। जो जीव संसरण करते हैं, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाते हैं, वे संसारी जीव होते हैं। सिद्ध जीवों को नवतत्त्व के नवें भेद 'मोक्ष' में लिया जा सकता है।

संसारी जीवों के भिन्न-भिन्न वर्गीकरण होते हैं, जैसे–

(१) त्रस–जो सुख प्राप्ति और दुखमुक्ति के लिए गति-क्रिया करते हैं, वे त्रस हैं।
स्थावर–जो इस तरह गति क्रिया नहीं करते हैं, वे स्थावर होते हैं।
(२) भव्य–जिन जीवों में मोक्ष में जाने की योग्यता होती है, वे भव्य कहलाते हैं।
अभव्य–जिनमें वह योग्यता नहीं होती है, वे अभव्य कहलाते हैं।

इस प्रकार विभिन्न वर्गीकरण यहाँ प्रस्तुत किए जा सकते हैं। त्रस जीवों के चार प्रकार होते हैं–द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रय और पंचेन्द्रिय।

स्थावर जीवों के पाँच भेद होते हैं–पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक।

पंचेन्द्रिय जीवों के चार प्रकार होते हैं–नारक, निर्यंच, मनुष्य और देव।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों के तीन भेद होते हैं–जलचर : पानी में रहने वाले जीव। स्थलचर : भूमि पर रहने वाले जीव। नभचर–आकाश में उड़ने वाले जीव।

जैन दर्शन का जंतु विज्ञान बहुत विस्तृत है।

(क्रमशः)

ज्ञान, दर्शन और तप की चेतना प्रवर्धमान रहे

दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने दिल्लीवासियों को सतत ज्ञान, दर्शन और तप की त्रिवेणी में अभिस्नात करने की प्रेरणा दी। लगभग एकादश माह के सफल और ऐतिहासिक दिल्ली प्रवास के पश्चात दिल्ली से विहार करने से पूर्व आयोजित मंगलभावना समारोह में मुनिश्री ने दिल्लीवासियों को संघ और संघपति के प्रति समर्पित रहते हुए एक ओर जहाँ वैयक्तिक साधना में सामायिक, जप, तप, स्वाध्याय और सेवा के माध्यम से निर्जरा करने का आह्वान किया, वहीं दूसरी ओर सभी को महत्त्वपूर्ण संघीय कार्यक्रम–ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, प्रेक्षाध्यान आदि के माध्यम से संघ सेवा का आह्वान किया। ज्ञातव्य है मुनिश्री की विशेष प्रेरणा से दिल्ली में ज्ञानशालाओं का गठन, उपासक श्रेणी का विस्तार और छः मासखमण सहित अनेकों बड़ी तपस्याएँ हुई। मुनिश्री के सहवर्ती संत मुनि नमिकुमार जी ने दस माह में छः मासखमण सहित बड़ी तपस्या करने का कीर्तिमान गढ़ा।

मुनि कमल कुमार जी ने उग्रविहार करते हुए संघीय प्रभावना वृद्धि करने वाले अनेक ऐसे कार्यक्रमों में सान्निध्य प्रदान किया, जिनमें दिगंबर आचार्य, स्थानकवासी संत, मंदिरमार्गी आचार्य आदि की उपस्थिति से तेरापंथ की विशेष प्रभावना हुई।

मंगलभावना समारोह को संबोधित करते हुए दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने मुनिश्री के दिल्ली प्रवास को विशिष्ट और विरल बताते हुए आचार्यप्रवर के प्रति ऐसा प्रभावक चातुर्मास प्रदान करने के लिए संपूर्ण दिल्लीवासियों की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनि नमि कुमार जी व मुनि अमन कुमार जी ने दिल्ली प्रवास को प्रभावी व उपलब्धि भरा बताया। अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन, गांधीनगर सभा अध्यक्ष कमल गांधी, सभा अध्यक्ष संजीव जैन, मंत्री मनोज मुसरफ, दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, महिला मंडल की अध्यक्षा शिल्पा बैद (दक्षिण), सरोज सिवानी (पूर्वी दिल्ली), पूर्व अध्यक्ष मंजु जैन, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, पूर्व महामंत्री डालमचंद बैद आदि ने मुनिश्री के प्रवास को दिल्ली के तेरापंथ के इतिहास के स्वर्णाक्षर स्वरूप बताते हुए मुनिप्रवर के सुखे-सुखे विहार की कामना की। तेयुप का प्रतिनिधित्व हेमराज राखेचा ने, अणुव्रत की ओर से शांतिलाल पटावरी, श्रावक समाज की ओर से जीवनमल नाहर, तेममं पूर्व अध्यक्ष मंजु जैन, सेवा प्रभारी मनोज सुराणा आदि ने भावाभिव्यक्ति दी। मुनिश्री गुरुग्राम-जयपुर होते हुए मुंबई की ओर अग्रसर हैं।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा का आयोजन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ सभा के अंतर्गत ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के द्वारा निर्देशित शिशु संस्कार बोध १ से ५ परीक्षा का आयोजन किया गया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक जीरावला एवं ज्ञानशाला के प्रभारी धनराज लोढ़ा, तेयुप के मंत्री राजकुमार नाहटा, सभा मंत्री अभिनंदन बागरेचा, महिला मंडल अध्यक्ष लता कोठारी की उपस्थिति में परीक्षा के पेपर्स को खोला गया। सभी ने बच्चों को मंगलकामना प्रेषित की एवं धर्म आराधना के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

बबिता लोढ़ा, सुनीता कोठारी, मधु जीरावला, संतोष बोकड़िया, दीपिका फुलफगर, लता कोठारी ने सभी परीक्षार्थी को शुभकामनाएँ दी। व्यवस्थापिका बबिता लोढ़ा ने नमस्कार महामंत्र से शुभारंभ किया। सभी प्रशिक्षिकाओं ने अपने-अपने चयनित भाग के बच्चों की परीक्षा सुचारु रूप से ली। कुल १२ बच्चों ने परीक्षा में भाग लिया।

✦ हिंसा के तीन कारण होते हैं-अज्ञान, अभाव और आवेश। इनके कारण व्यक्ति कई बार हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है।
आचार्य श्री महाश्रमण

भगवान महावीर की अहिंसा व भगवान बुद्ध की करुणा से ही विश्व शांति संभव

नई दिल्ली।

मुनि कमल कुमार जी ने महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर व अध्यात्म साधना केंद्र के संयुक्त तत्त्वावधान में महाकरुणा दिवस के अवसर पर अध्यात्म साधना केंद्र के भिक्षु सभागार में कहा कि भगवान महावीर व भगवान बुद्ध दोनों समकालीन थे। दोनों ने दीर्घकालीन ध्यान साधना से ज्ञान प्राप्त किया। उनका कथन सम भी कहा जा सकता है। भगवान महावीर ने अहिंसा का उपदेश दिया। हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। भगवान बुद्ध ने करुणा का उपदेश दिया। क्रूर व्यक्ति कभी अपना और दूसरों का कल्याण नहीं कर सकता। अगर व्यक्ति में अहिंसा और करुणा की चेतना का जागरण हो जाए तो आज घर, परिवार, समाज, देश और विश्व में तनाव, टकराव, अलगाव, बिखराव की समस्या नहीं हो सकती।

महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन के फाउंडर चेयरमैन भिक्षु संघसेना ने कहा कि मनुष्य बदलने की प्रवृत्ति के कारण सबसे श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। पशुओं में बदलने की प्रवृत्ति नहीं होती, इसी कारण उसका विकास नहीं हुआ है। मनुष्य की श्रेष्ठता का कारण है कि वह बाहर और भीतर से भी बदलता है। मनुष्य का दृष्टिकोण व चिंतन भी बदल रहा है। व्यक्ति में बाहर से बहुत बदलाव आ गया है। आवश्यकता है कि व्यक्ति भीतर से भी बदले, चेतना जागृत में परिवर्तन आए।

अध्यात्म साधना केंद्र के निदेशक व प्रबंध न्यासी के०सी० जैन ने सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए कहा कि जैन परंपरा की अहिंसा, बौद्ध परंपरा की करुणा और इसी प्रकार सनातन, सिख व इस्लाम आदि धर्मों में जो संसार में प्राणी मात्र के प्रति प्रेम भाव की प्रेरणा दी गई है वह प्रकृति का शाश्वत और सार्वभौम नियम है। व्यक्ति के परिवर्तन का सूत्र अध्यात्म में मिलता है। अध्यात्म साधना केंद्र में भगवान महावीर की अहिंसा व बुद्ध की करुणा का संगम देखने को मिल रहा है।

पुदुच्चेरी की पूर्व उपराज्यपाल किरण बेदी ने कहा कि जिस व्यक्ति में धैर्य और वीर्य है वह धर्म पर डट सकता है। व्यक्ति अपनी आत्मा पर अनुशासन, शरीर पर अनुशासन रखे तो उसके मन और शरीर के द्वारा कोई गलत प्रवृत्ति नहीं हो सकती है। उन्होंने कहा कि विपश्यना ध्यान के द्वारा हृदय परिवर्तन संभव है यह उन्होंने अपने कार्यकाल में जेलों में जब ध्यान के कार्यक्रम हुए तो हजारों कैदियों में परिवर्तन होते हुए देखा। इसलिए ध्यान वर्तमान का एक प्रमुख अंग होना चाहिए।

इस अवसर पर म्यांमार के राजदूत मोय केयो अंग, भूटान के राजदूत वेटसोप नेमोजियल, डॉ० उमर अहमद इलयासी, गोस्वामी सुशील गोस्वामी महाराज, स्वामी सर्वलोकानंद महाराज, परमजीत चंडोक, मौलाना कुतुब मुजतबा साहिब, डॉ० प्रिया, डॉ० ए०के मर्चेन्ट, सुखराज सेठिया, प्रमोद जैन, अनिल जैन, सुशील राखेचा, सुशील बोथरा, एस०सी० जैन, डालमचंद बैद, शिल्पा बैद सहित कई महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित थे।

सप्ताह के विशेष दिन

24 जनवरी, 2024 — भगवान अभिनंदन केवलज्ञान कल्याणक दिवस

25 जनवरी, 2024 — भगवान धर्मनाथ केवलज्ञान कल्याणक दिवस, पक्खी

26 जनवरी, 2024 — 75वाँ गणतंत्र दिवस

31 जनवरी, 2024 — भगवान पद्मप्रभु च्यवन कल्याणक दिवस

अभिनंदन मिलन समारोह का आयोजन

कालू।

तेरापंथ भवन में साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के सान्निध्य में साध्वी चरितार्थप्रभा जी का स्वागत समारोह मनाया गया। साध्वी चरितार्थप्रभा जी गंगानगर चातुर्मास संपूर्ण कर सभी गाँवों को परसते हुए लूणकरणसर से कालू पधारे। साध्वी उज्ज्वलरेखा जी ने सभी साध्वियों का स्वागत अभिनंदन किया। साध्वीश्री जी ने बताया कि चरितार्थप्रभा जी बहुत सरल, चिंतनशील साध्वी हैं। गुरुदेव के आदेश से समणी दीक्षा ली और २६ वर्षों तक समणी दीक्षा में रहे। समणी दीक्षा के अंतर्गत आपने बहुत यात्राएँ की एवं विदेश की यात्राएँ भी कीं। गुरुदेव की कृपा से आप जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी के साढ़े पाँच साल तक कुलपति रहे।

सहवर्ती साध्वी आगमप्रभा जी की बोलने की शैली अच्छी है। साध्वी कृतार्थप्रभा जी, साध्वी वैभवयशा जी और साध्वी आर्यप्रभा जी हर प्रकार के कार्य करने में कुशल हैं, गायन में भी अच्छे हैं। सभी साध्वियों का तहेदिल से स्वागत करती हूँ। आप यहाँ कृपा कर कालू पधारे हमारा मिलना हुआ।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि गुरुदेव की कृपा से ११ महीनों में दो बार मायतों के पास आना हुआ। गुरुदेव ने हमें यह बहुत बड़ा उपहार दिया है। हम सभी गुरुदेव के आभारी हैं। सभी साध्वियों से मिलना अपने आपमें हर्ष की अनुभूति है। सभा, कन्या मंडल, महिला मंडल की बहनों एवं तेयुप ने रास्ते की सेवा की। सभी साध्वियों ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ के सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी विदामाजी के दर्शन करने का सेवा करने का अवसर मिला। साध्वी हेमप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष बुद्धमल लोढ़ा ने कहा कि कालू धरा पर एक साथ ११ सतियों के दर्शन करने का अवसर मिल रहा है। महिला मंडल अध्यक्ष चंद्रकला दुगड़ ने स्वागत किया। कन्या मंडल प्रभारी रेनू बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी नम्रप्रभा जी ने किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जन अनुष्ठान का आयोजन

छापर।

अभातेमम के निर्देशानुसार छापर तेमम के तत्त्वावधान में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के सान्निध्य में तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याण दिवस के उपलक्ष्य में काफी भाई-बहनों ने नवकारसी, पोरसी, उपवास, रात्रि भोजन त्याग, द्रव्य सीमा और जमीकंद के त्याग आदि कई तप और त्याग किए और व्याख्यान के समय मुनिश्री के द्वारा उपसर्गहर स्तोत्र का पाठ करवाया गया तथा साथ में जप भी करवाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष मंजु दुधोड़िया, मंत्री हेमु दुधोड़िया एवं संपूर्ण टीम का विशेष सहयोग रहा।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का राज्य स्तरीय आयोजन

ठाणे।

अणुविभा द्वारा निर्देशित राज्य स्तरीय अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३ का आयोजन असली आजादी अपनाओ की थीम पर ठाणे माजीवाड़ा तेरापंथ भवन में किया गया। इस कॉन्टेस्ट में महाराष्ट्र के ४ जिलों मुंबई, ठाणे, कोल्हापुर, चंद्रपुर ने भाग लिया। जिनमें विवेक विद्यालय एंड जूनियर कॉलेज, पटुक टेक्निकल हाईस्कूल, अभिनव स्कूल, ज्ञानशाला, श्रीबालाजी पब्लिक स्कूल, बांगुर विद्या भवन, तिलक नगर स्कूल, सेंट मैरी स्कूल, श्री गौरीदत्त मित्तल विद्याल, बी०के० बिरला, साईं इंग्लिश मीडियम स्कूल, गुरुनानक जूनियर कॉलेज, आर्या गुरुकुल स्कूल, वैंकटेश्वरा इंग्लिश स्कूल एवं श्री नोकाड़ा हिंदी विद्या मंदिर के ४४ बच्चे सम्मिलित थे। चंद्रपुरा से अंबुजा विद्या निकेतन के बच्चों ने ऑनलाइन भाग लिया।

दो ग्रुप में ५ प्रतियोगिताएँ रखी गई, जिनमें निबंध लेखन, चित्रकला, गीत गायन (एकल ग्रुप) भाषण एवं कविता लेखन थी और सभी प्रतियोगिताओं के लिए ४ निर्णायकगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत डिंपल हिरण, तरुणा कोठारी, आशा पिचोलिया और मुकेश मादरेचा ने अणुव्रत गीत के द्वारा की। मुंबई अणुव्रत समिति अध्यक्ष रोशनलाल मेहता ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं सभी प्रतियोगी बच्चों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। बच्चों को उत्साहवर्धन डिंपल हिरण द्वारा तिलक एवं चॉकलेट देकर किया गया। निर्णायक के रूप में किरण परमार, राजेश चौधरी, किरण दंतानी, सलोनी बाबेल एवं मानसी कांबले की भूमिका रही।

एसीसी महाराष्ट्र प्रभारी डिंपल हिरण, एसीसी वेस्ट जोन संयोजक किरण परमार ने सभी प्रतियोगियों को प्रतियोगिता की जानकारी प्रदान की। मुकेश मादरेचा ने प्रतियोगिता के नियम समझाए। कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्ष रोशन मेहता, मंत्री राजेश चौधरी, एसीसी महाराष्ट्र प्रभारी डिंपल हिरण, सहप्रभारी आशा पिचौलिया, वेस्ट जोन संयोजक किरण परमार, मुंबई संयोजक तरुणा कोठारी, मुकेश मादरेचा, थाणे संयोजक रतन कच्छारा, महिला मंडल से विमला हिरण एवं भारती ओस्तवाल का सहयोग रहा।

मुंबई सभा के सहमंत्री मनोहर कच्छारा, सभा अध्यक्ष रमेश सोनी, पवन ओस्तवाल, जयंती बरलोटा, नवरतन गोखरू, देवीलाल श्रीश्रीमाल, प्रीति बोथरा की विशेष उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति, मुंबई मंत्री राजेश चौधरी ने किया। कार्यक्रम के समापन पर सभी बच्चों को उपहार दिए गए। कार्यक्रम का संचालन मुकेश मादरेचा व डिंपल हिरण ने किया। मुंबई अणुव्रत समिति के सदस्यों, स्कूल टीचर्स एवं पेरेंट्स की उपस्थिति रही।

बीकानेर संभाग स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

तेममं, बीकानेर संभाग स्तरीय कार्यशाला शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी, साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में गंगाशहर महिला मंडल द्वारा 'मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी' आंचलिक कार्यशाला का आयोजन दो सत्रों में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

'मेरा परिवार-मेरी जिम्मेदारी' का लोगो विमोचन राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया। महिला मंडल, गंगाशहर की बहनों ने सुमधुर स्वर में अपने भावों की अभिव्यक्ति मंगलाचरण द्वारा दी। संजू लालानी अध्यक्ष, गंगाशहर ने स्वागत वक्तव्य में सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य ममता रांका ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि स्त्री के दो रूप होते हैं–प्रथम कलहकारी और द्वितीय कल्याणकारी। कल्याणकारी रूप परिवार को स्वर्ग बनाता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा के नामार्थ को व्याख्या करते हुए सरिता (नदी) की भाँति निरंतर प्रवाहमान रहने की प्रेरणा दी।

साध्वी कांतप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। 'आपकी समझ' पर सास-बहू के सामंजस्य पर गंगाशहर महिला मंडल ने परिसंवाद द्वारा प्रस्तुति दी। शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि परिवार में संगठन एवं सामंजस्य से रहें, तो परिवार सुखी एवं संपन्न हो सकता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य परिवार में विलुप्त होते संस्कार को दोबारा पल्लवित एवं संपोषित करना है। उनकी सबसे पहले सीख बड़ों को मान-सम्मान देना और छोटों को प्यार से सामंजस्यपूर्वक परिवार में जोड़े रखना। घर, स्वस्थ तो समाज स्वस्थ, समाज स्वस्थ तो देश अपने आप स्वस्थ रहेगा।

सास-बहू और साजिश नामक विषय पर परिसंवाद हुआ। कन्या मंडल, गंगाशहर ने प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने एक कहानी के माध्यम से मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी के बारे में समझाया। महिला मंडल, गंगाशहर ने आपकी अदालत विषय परिसंवाद में समझाया संयुक्त परिवार को बनाए रखने की सभी की जिम्मेदारी होती है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, विजयलक्ष्मी भूरा, कार्यसमिति सदस्य ममता रांका, नीरू पुगलिया, अलका बैद, प्रीति घोषल की उपस्थिति रही। सभी पधारे हुए सदस्यों का आभार गंगाशहर महिला मंडल की मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने किया। कार्यक्रम की संयोजिका रेखा चोरड़िया, महिला मंडल की सदस्य ने संचालन किया।

द्वितीय सत्र में महिला मंडल के इतिहास को वीडियो क्लिप के द्वारा दिखाया गया। इस अवसर पर तेममं बीकानेर, भीनासर, लूणकरणसर, उदासर, श्रीडूंगरगढ़, जोरावरपुरा, नोखा ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यशाला में लगभग १२ क्षेत्रों की लगभग ४५० बहनों की सहभागिता रही। अभातेममं द्वारा मंडल की सभी उपस्थित शाखा मंडलों का प्रशस्ति-पत्र द्वारा सम्मान किया गया।

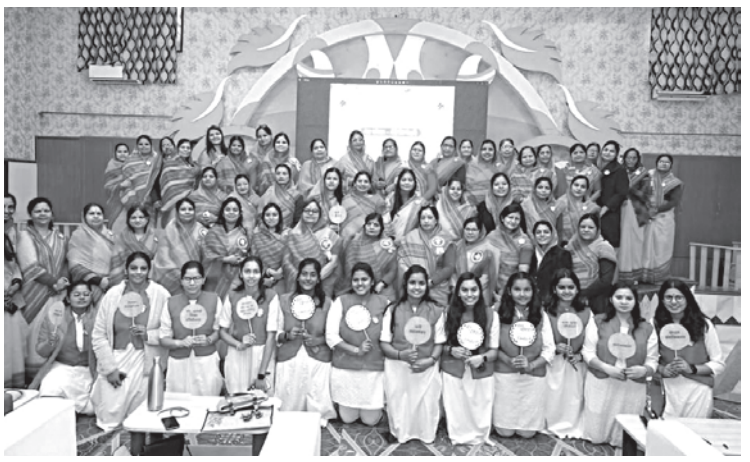

नव वर्ष पर मंगल पाठ के विविध आयोजन

तिरुवन्नामलाई

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में वृहद मंगलपाठ का आयोजन हुआ। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि नए वर्ष का प्रवेश, नई उमंग, नई सोच, उल्लास के साथ करें। नए वर्ष में हमें सोचना है, मैं एक दिव्य आत्मा हूँ, आज का दिन मेरा दिन है। जीवन में कुछ कमियाँ हैं, उसको डिलीट करना है, अच्छाइयों को सेव करना है और जो अच्छा लगे तो उसे फॉरवर्ड कर दें।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि हम सभी कह रहे हैं, नए वर्ष में नया संकल्प संजोना है, पर प्रश्नचिह्न है नया क्या है? वहीं महिना, वहीं तारीख, वहीं दिन फिर नया क्या है, सिर्फ पर्याय परिवर्तन हो रहा हैं। इसीलिए आवश्यकता है सिर्फ सोच को ही नया ना करें, जीवन में कुछ नया करें।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी मेरूप्रभा जी ने अपनी सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। नए वर्ष की मंगलपाठ के साथ अनेक मंत्रोच्चार सुनाए गए। सभी को मंगलभावनाओं से भावित किया एवं सभी के प्रति मंगलमय, आरोग्यमय, कल्याणमय भावना प्रेषित की।

कार्यक्रम का संचालन नैना सेठिया ने किया। स्वागत भाषण अरविंद सेठिया ने किया। तिरुपुर के सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उपासक श्रेणी पूर्व व्यवस्थापक विनोद बांठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। उपासिका संतोष भाई आंचलिया ने गीतिका की प्रस्तुति दी। तमन्ना झाबक, बाल कवयित्री ने अपनी कविताओं की प्रस्तुति दी। गणेश गौरव ने आभार व्यक्त किया।

सिरियारी

नववर्ष की पूर्व संध्या पर भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अर्हत वंदना से हुई। जयपुर से पूर्वा बांठिया व साक्षी बांठिया मुख्य कलाकार थे। एक-दूसरे को देखकर लोगों में भक्ति की अभिव्यक्ति करने की होड़ सी लगी। कार्यक्रम में २० से अधिक लोगों ने गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि विनीत कुमार जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुई। मुनि आकाश कुमार जी ने स्वरचित कविता पाठ से स्वामी जी के प्रति उद्गार व्यक्त किए व कुछ घटनाओं के माध्यम से स्वामी जी से जोड़ने का प्रयत्न किया। मुनि विनीत कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने अनेकानेक गीतों के माध्यम से संचालन किया।

नववर्ष के उपलक्ष्य में १३ क्षेत्रों से ज्यादा के लोग उपस्थित थे। दूसरे दिन नववर्ष के उपलक्ष्य में शासनश्री मणिलाल जी स्वामी के सान्निध्य में बृहद मंगलपाठ का आयोजन हुआ। लगभग १०० से अधिक की उपस्थिति रही। मुनिश्री ने सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

ज्ञानशाला परीक्षा का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर के अंतर्गत ज्ञानशाला परीक्षा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने ज्ञानार्थियों को मंगलपाठ सुनाया। मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने ज्ञानार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि परीक्षा बालकों के लिए अभिनव कार्यक्रम है। इससे प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन होता है। अतः परीक्षा से घबराने की अपेक्षा नहीं, बल्कि उत्साह के साथ भाग लेना चाहिए।

मुनिवृंद की उपस्थिति में तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा, तेयुप मंत्री भरत गोलछा, तेरापंथी सभा मंत्री रतन छल्लाणी, महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालाणी, परीक्षा व्यवस्थापक देवेंद्र डागा, प्रभारी चैतन्य रांका, सहप्रभारी रजनीश गोलछा, संयोजिका सुनीता पुगलिया ने पेपर का अनावरण किया। परीक्षा में १५५ बालक-बालिकाओं ने शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ तक की परीक्षा दी। भाग-१ में सुनीता डोसी, मोहिनी देवी चोपड़ा, प्रेम बोथरा, सुनीता पुगलिया, प्रियंका रांका, कनक गोलछा, भाग-२ में शीतल नाहटा, श्रीया गुलगुलिया, जयश्री भूरा, कुसुम पारख, भाविका सामसुखा, जयश्री डागा, भाग-३ में सरिता आंचलिया, कविता चौपड़ा व भाग-४ में रक्षा बोथरा तथा भाग-५ में रुचि छाजेड़ ने ज्ञानार्थियों की मौखिक परीक्षा ली।

परीक्षा के सुव्यवस्थित संचालन में तेयुप कार्यकारिणी सदस्य विपिन बोथरा, ललित सेठिया, जयेश छाजेड़, दृष्टि चौपड़ा, दीक्षा बोथरा का श्रम नियोजित हुआ।

भगवान महावीर के २५५०वाँ निर्वाण दिवस पर आयोजन

छोटी खाटू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में भगवान महावीर के २५५०वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में अभ्यर्थना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण सुमन देवी सेठिया ने महावीर स्तुति से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि वीर वह होता है जो तीर तक पहुँचना जानता है। तीर वह होता है जो भव भव की पीर को मिटाना जानता है। पीर को मिटाने के लिए, जिन्होंने तोड़ी कर्मों की जंजीर, उनकी वाणी को सुन जाग उठे रोहिणेय जैसे चोर, अर्जुनमाली और शूलपाणी जैसे घोर हिंसक की तकदीर महावीर का दर्शन आत्म कर्तव्य का दर्शन है, जहाँ हर प्राणी अपने कर्मों के अनुसार सद्गति एवं दुर्गति का जिम्मेदार है।

मंजु देवी एवं राजेंद्र फुलफगर ने कविता, मुक्तक के द्वारा अपने भाव प्रकट किए। गुलाब देवी वेद ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में साध्वी प्राज्ञप्रभा जी द्वारा सुमधुर गीतिका से वातावरण महावीरमय बना दिया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

✦ जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।
आचार्य श्री महाश्रमण

प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस के आयोजन

माथाभांगा

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक मनाया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का नाम विश्वविख्यात है। प्रभु का दूसरा नाम पुरुषादानीय बहुप्रचलित है, क्योंकि उनका व्यक्तित्व उस समय में भी बहुत लोकप्रिय था। हमें निष्काम भाव से तीर्थंकरों की भक्ति करनी चाहिए। बिना किसी फल की इच्छा से भगवान का स्मरण करने से निर्जरा होने के साथ पुण्य की भी सहज प्राप्ति हो जाती है।

कल्याण मंदिर, उवसग्गहर स्तोत्र में उनकी स्तुति है, जिसे श्रद्धालु श्रावक समाज श्रद्धा से स्मरण करते हैं। धरणेंद्र व पद्मावती दोनों ही देवपुरुष का प्रभु पार्श्वनाथ के प्रति भक्तिभाव अनुकरणीय, वंदनीय है। उपकारी का उपकार कैसे चुकाया जाता है, उसका उदाहरण है धरणेंद्र पद्मावती।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि तीर्थंकर का च्यवन से लेकर मोक्ष तक का सफर पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी होता है। नरक के जीवों को च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष प्राप्ति के समय क्षणिक सुख, शांति का अनुभव होता है, इसलिए इन्हें कल्याणक कहा जाता है। राजकुमार पार्श्वनाथ का नाग-नागिन को अंतिम समय में नवकार महामंत्र सुनाने का यह प्रसंग नवकार महामंत्र की महत्ता को बताता है। पूर्ण श्रद्धा आस्था के साथ जप का प्रयोग करने से यथोचित फल अवश्य मिलता है।

महासभा प्रभारी राजकुमार बोथरा, माथाभांग सभा अध्यक्ष बाबूलाल भादाणी ने विचार व्यक्त किए। पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति एवं जप का सामूहिक संगान किया गया।

गंगाशहर

तेरापंथ भवन में भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि तीर्थंकर परंपरा में भगवान पार्श्वनाथ अलौकिक महापुरुष थे। उनको चिंतामणि कल्पवृक्ष कामधेनु और पुरुषादानीय के रूप में मान्यता प्राप्त है। तीर्थंकर परंपरा में सर्वाधिक मंत्र स्तोत्र, स्तुति भगवान पार्श्वनाथ पर लिखित मिलते हैं। भगवान पार्श्वनाथ चातुर्याम धर्म के प्रयोक्ता थे। उन्होंने गृह जीवन में रहते हुए अनेक जीवों को सुलभ बोधि बनाकर भव से पार किया।

मुनिश्री ने आगे कहा कि ऐसा कोई अक्षर नहीं, जो मंत्र ना बन सके। ऐसी कोई जड़ी नहीं जो औषध के रूप में काम न आए और ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसका उपयोग नहीं हो। आवश्यकता नियोजन करने वालों की है।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने भगवान पार्श्व की स्तुति में रचित एक मधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने भगवान पार्श्व से संबंधित विविध मंत्रों का सामूहिक रूप से जप करवाया। चैनरूप छाजेड़ ने गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर भाई-बहनों ने उपवास, आयंबिल, एकासन तप एवं रात्रि भोजन न करने का संकल्प किया।

अहमदाबाद

२३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जयंती के अवसर पर तेयुप द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में सामूहिक जप सहित सामायिक का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में किया गया। सामायिक में करीब २०० श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। तेयुप अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण, अभातेयुप साथी, अन्य सभा-संस्थाओं के अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंतर्गत युवाओं व किशोरों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। २२५ से अधिक त्याग-तपस्या के फार्म भरे गए, जिसमें उपवास ११७, एकासन ७०, रात्रि भोजन त्याग १९५, जप सहित सामायिक २३० हुई।

बैंगलुरु

जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर तेयुप, बैंगलुरु द्वारा तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत सवा करोड़ 'ॐ भिक्षु जप' का शुभारंभ किया गया। ३०० से भी अधिक किशोर, युवा एवं श्रावक-श्राविका समाज २७ दिन तक लगातार ॐ भिक्षु का जप कर इस अनुष्ठान में सहभागी बन रहे हैं। इस उपक्रम में मनीष भंसाली एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम लगा।

– भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर अभातेयुप द्वारा निर्देशित प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, गांधीनगर में किया गया। अनेक किशोरों एवं युवकों ने इस अवसर पर उपवास, एकासन एवं रात्रि भोजन त्याग कर तपोयज्ञ में अपनी आहुति दी।

इस अवसर पर अध्यक्ष रजत बैद, पदाधिकारीगण, परिषद एवं किशोर मंडल के कार्यकर्ता एवं श्रावक उपस्थित थे।

विजयनगर

अभातेयुप निर्देशित तेयुप द्वारा आयोजित प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस पर जप सहित सामायिक का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। भगवान पार्श्वनाथ के चमत्कारी मंत्रों के जप के साथ सामायिक का अनुष्ठान किया गया। उपसर्गहर स्तोत्र के साथ 'ॐ नमिउण पार्श्वनाथ' का जप किया गया। तत्पश्चात भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गई। कई भाई-बहनों ने उपवास-एकासन-रात्रि भोजन त्याग, जप का प्रयोग किया।

इस आयोजन में परिषद अध्यक्ष राकेश पोखरणा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री कमलेश चोपड़ा, सहमंत्री रोनक चोरड़िया, संगठन मंत्री पवन बैद, परामर्शक राकेश श्यामसुखा, महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरड़िया, तेयुप परिवार, श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

दक्षिण मुंबई

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के आचार्य तुलसी सभागृह में पौष कृष्ण १० को प्रभु पार्श्व प्रणति एवं अभिनव सामायिक का कार्यक्रम मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। नवकार महामंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

तेयुप अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने स्वागत भाषण में सभी का स्वागत किया व मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनि मोहजीत कुमार जी ने अभिनव सामायिक में त्रिपदी वंदना, जप योग, ध्यान योग के साथ-साथ स्वाध्याय के क्रम में महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी रहे मुनि जयेश कुमार जी ने श्रद्धा के विषय पर श्रावकों को अपनी आस्था इधर-उधर न बिखेरकर सिर्फ एक के प्रति केंद्रित कर परम को प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

तेयुप, तेरापंथी सभा, आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन, महिला मंडल, अणुव्रत क्षेत्रीय संयोजक, किशोर मंडल आदि संस्थाओं के कार्यकर्ता उपस्थित थे। संचालन कार्यक्रम संयोजक एवं उपाध्यक्ष राहुल मेहता ने किया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम सह-संयोजक एवं सहमंत्री गिरीश शिशोदिया ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप के तत्त्वावधान में राउंड ईयर ह्यूमैनिटी थीम रक्तदान-२०२४ का 'रिहामो' ऑफिस के पास, प्रथम ब्लॉक, राजाजीनगर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। शिविर में रक्तदान हेतु पधारे स्थानीय लोगों ने मानव सेवा के क्षेत्र में रक्तदान शिविरों का आयोजन करना उपयोगी बताया तथा तेयुप सदस्यों की प्रशंसा की। ब्लड बैंक के सहयोग से कुल १० यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। ब्लड बैंक ने परिषद परिवार को सम्मानित करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप, राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। शिविर के व्यवस्थित आयोजन करने में एमबीडीडी प्रभारी सुनील मेहता, संयोजक विनोद कोठारी एवं राजेश देरासरिया, कमलेश चोरड़िया, जयंतीलाल गांधी, अरिहंत गन्ना, हर्ष बरलोटा की उपस्थिति रही।

अभिनव सामायिक का आयोजन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक किया गया। कार्यक्रम उपासक धनराज लोढ़ा द्वारा कराया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र द्वारा की गई।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला, महिला मंडल अध्यक्षा लता कोठारी, तेयुप अध्यक्ष अमृत चौपड़ा, मंत्री राजकुमार नाहटा, सहमंत्री विकास संकलेचा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन मंत्री राजकुमार नाहटा ने किया।

मनुष्य करे धर्म की साधना, अध्यात्म की आराधना....

(पृष्ठ १२ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जैन परंपरा में अनेक प्रभावक आचार्य हुए हैं, उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व के द्वारा धर्म की प्रभावना की है। अपने कार्यों से जैन धर्म का उद्योत किया है। आचार्य यशोविजय जी ने कहा है कि तुम अपनी प्रवृत्तियों के प्रति जागरूक बनो। स्व-दर्शन करो तो धीरे-धीरे समता को प्राप्त कर लोगे। दूसरों के दोषों को मत देखों वहाँ मूक-वधिक बन जाओ। पूज्यप्रवर स्थितप्रज्ञता की स्थिति में आगे बढ़ रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में भांडुप सभाध्यक्ष मनोज बोथरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेमम की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

परम सुख की प्राप्ति के लिए स्वीकारें धर्म की शरण : आचार्यश्री महाश्रमण

कांजुरमार्ग, १० जनवरी, २०२४

वृहत्तर मुंबई के क्षेत्रों को पावन करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः कांजुरमार्ग पहुँचे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि शरण शब्द हम कई बार काम में लेते हैं। अरहंतो की शरण स्वीकार करते हैं। सिद्धों, साधुओं और केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण स्वीकार करते हैं।

सबसे मूल तो केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण है। इनकी शरण से परम सुख को प्राप्त किया जा सकता है। शास्त्रकार ने कहा है कि तुम्हारे स्वजन, मित्र और परिवार आदि लोग हैं, वे तुम्हें शरण देने में समर्थ नहीं हैं। तुम भी अपने पारिवारिकजनों, मित्रों को शरण और त्राण देने में समर्थ नहीं हो।

व्यवहार में एक-दूसरे को एक-दूसरे से सहायता-सुरक्षा मिल जाती है। त्राण देने, सुरक्षा देने का प्रयास भी किया जाता है। डॉक्टर मरीज की, धनाढ्य व्यक्ति गरीब की देखभाल-सहायता करते हैं।

बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु ये ऐसी स्थितियाँ हैं कि उस स्थिति में कोई त्राण नहीं बन सकता है, धर्म त्राण बन सकता है। सारी स्थितियों से मुक्त हो आत्मा मोक्ष में विराज जाती है। अध्यात्म, धर्म और वीतरागता की साधना से व्यक्ति अशरीर अवस्था को प्राप्त हो जाता है तो सब दुःखों से छुटकारा हो जाता है।

धर्म शास्त्रों से हमें यह पथदर्शन मिल जाता है कि जीवन कैसे जीया जाए। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी अध्यात्म और त्याग-संयम चले। धर्म का प्रभाव साथ चल सकेगा, धन और भौतिक चीजें यहीं रह जाएँगी। बढ़ती उम्र में आदमी को आत्मा और अध्यात्म के प्रति जागरूक होना चाहिए। समाज की धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा करनी चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि नदी कभी जल नहीं पीती। वृक्ष कभी फल नहीं खाते हैं, उसी प्रकार सज्जन व्यक्तियों का जीवन परोपकार के लिए ही होता है। प्रकृति हमें परोपकार की प्रेरणा देती है। आचार्यप्रवर परोपकार के लिए अनेक कार्य कर रहे हैं। परोपकार के लिए ही आचार्यश्री प्रलंब यात्रा कर रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय विधायक सुनील राउत, स्थानीय सभाध्यक्ष सुरेश लोढ़ा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेयुप एवं महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला, कन्या मंडल व किशोर मंडल की प्रस्तुति हुई। एम०एस० बिट्टा, विवेक तलवार ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अभिनव सामायिक फेस्टिवल के विविध आयोजन

वडोदरा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित अभिनव सामायिक का आयोजन तेयुप द्वारा सभा भवन में किया गया। उपासिका गीता श्रीमाल, मंजु श्रीमाल एवं स्नेहलता समदरिया ने कार्यक्रम सुंदर तरीके से करवाया।

सभा, महिला मंडल, तेयुप एवं सभी संस्थाओं का अच्छा सहयोग मिला। कार्यक्रम में कुल ७३ की उपस्थिति रही।

बैंगलुरु

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा उपासिका शांति सकलेचा के निर्देशन में तेरापंथ भवन गांधीनगर में, प्रशिक्षिका बबीता चोपड़ा के निर्देशन में चामराजपेट एवं उपासक विनोद कोठारी के निर्देशन में बनरघट्टा रोड में कुल ८४ सामायिक हुई। परिषद अध्यक्ष रजत बैद ने बताया कि अभातेयुप की ३५८ शाखाएँ पूरे देश व नेपाल में नववर्ष के प्रथम रविवार को सामायिक फेस्टिवल का आयोजन करवाती हैं।

उपासक, उपासिका एवं प्रशिक्षिका द्वारा तीनों स्थानों में अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया गया। सामायिक में व्यक्ति ४८ मिनट के लिए सारे सांसारिक कार्यों का त्याग कर अध्यात्म साधना में लीन हो जाता है।

तीनों स्थानों पर परिषद पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, साधारण सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। संयोजक विक्रम सेठिया, भरत रायसोनी, प्रवीण सिंघी, दिलीप खटेड़, पंकज भंडारी, विमल धारीवाल आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

ईरोड

अभातेयुप के निर्देशानुसार में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा के नेतृत्व में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल उत्सव विश्व मैत्री का आयोजन किया गया। प्रवक्ता उपासक हनुमान दुगड़ के निर्देशन में सामायिक हुई। तेयुप अध्यक्ष महेंद्र भंसाली ने अभिनव सामायिक के बारे में संपूर्ण जानकारी दी।

उपासक प्रकाश पारख, रमेश पटावरी ने भाव व्यक्त किए। अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री अमित नाहटा का कहना है कि विश्व मैत्री के भावों से इस आयोजन को वृहद रूप दिया जाता है, जिसमें जैन समाज के श्रावक-श्राविका विश्व मैत्री की मंगलकामना के साथ अभिनव सामायिक की साधना करते हैं।

तेयुप कोषाध्यक्ष अर्जुन पारख ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेयुप के हेमंत दुगड़, सुरेश चौपड़ा, अर्जुन पारख, जितेंद्र वैदमुथा, सुमित सुराणा, नरेश हिरण, अभिषेक बोथरा का सहयोग रहा। लगभग ४१ सामायिक की हुई।

तिरुपुर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में अभिनव सामायिक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उपासिका बहनों द्वारा कार्यक्रम संपादन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। जिसके पश्चात परिषद अध्यक्ष सोनू डागा ने अपना स्वागत वक्तव्य दिया। उपासिका उषा डागा, उपासिका संजु दुगड़ एवं उपासिका संतोष आंचलिया ने विधिवत अभिनव सामायिक को क्रम अनुसार संपादित किया। साथ ही उपस्थित श्रावक समाज को सामायिक का महत्त्व समझाया। कार्यक्रम में ३५ श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। आभार ज्ञापन चेतन बरड़िया ने किया।

सूरत

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा सामायिक फेस्टिवल का आयोजन दो सेंटर पर किया गया। तेरापंथ भवन सिटीलाइट, सूरत और आशीर्वाद पैलेस भटार में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन सिटीलाइट, सूरत में शासनश्री साध्वी मधुबाला जी के सान्निध्य में लगभग २०० से अधिक सामायिक हुई। साध्वी मंजुलयशा जी ने मंत्रों के जप के द्वारा सामायिक को पूरा करवाया।

आशीर्वाद पैलेस में शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी, साध्वी त्रिशला कुमारी जी, साध्वी हिमश्री जी के सान्निध्य में लगभग १२५ से अधिक सामायिक हुई। दोनों सेंटर पर साध्वीश्री जी ने सामायिक का महत्त्व बताया।

अमराईवाड़ी

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मुनि सुव्रत कुमार जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

मुनि सुव्रत कुमार जी ने अभिनव सामायिक का महत्त्व बताते हुए अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। मुनिश्री ने ध्यान, स्वाध्याय, वंदना, जप अनुष्ठान करवाया।

मुनि मंगलप्रकाश जी ने नमस्कार महामंत्र के प्रथम पद 'नमो अरहंताणं' का विशेष महत्त्व बताते हुए कहा कि वंदना करने से तीर्थंकर गोत्र बंधन होता है। इस नमो अरहंताणं पद से हम सुविधिनाथ तीर्थंकर आदि तीर्थंकरों को वंदन करते हैं। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

अंत में मुनि सुव्रत कुमार जी ने सुंदर गीतिका प्रस्तुत की एवं मंगलपाठ से कार्यक्रम समापन किया। कार्यक्रम में लगभग ४० सदस्यों की उपस्थिति रही। अभिनव सामायिक फेस्टिवल के संयोजक तेयुप उपाध्यक्ष विपुल मांडोत के श्रम से कार्यक्रम सफल हुआ।

✦ *कर्म निर्जरा के लिए की गई तपस्या विशुद्धतम है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22-28 जनवरी, 2024

परिवर्तन के आकर्षण में इतना नहीं बहना चाहिए कि व्यक्ति मूल्यपरक संस्कृति से दूर हो जाए।
आचार्य श्री महाश्रमण

मनुष्य करे धर्म की साधना, अध्यात्म की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

भांडुप, १२ जनवरी, २०२४

अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज अपनी धवल सेना के साथ मुंबई के उपनगर भांडुप पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परमपूज्य ने फरमाया कि आदमी दुनिया में अकेला जन्म लेता है और अकेला ही जीवन जीकर एक दिन चला जाता है। अकेला ही कर्मों का संचय करता है और अकेला ही कृत कर्मों का फल भोगता है।

मैं अकेला हूँ यह निश्चय की भाषा हो सकती है। व्यवहार में अनेक लोग साथ में रहते हैं। एक-दूसरे के साथ खड़े होते हैं। सहयोग की बात भी आपस में होती है। तत्त्वज्ञान का तत्त्वार्थ सूत्र एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। दिगंबर परंपरा में भी वह मान्य है। इस ग्रंथ में 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' की बात बताई गई है। छः द्रव्य सबके लिए कितने उपयोगी हैं। जीव एक-दूसरे का सहयोग करते हैं।

मनुष्य-मनुष्य का भी सहयोग करता है। प्राणी प्राणी के काम आता है।

हमें जीवन में अनेकों का सहयोग मिलता है। हम अकेले भी हैं और समूह में बहुत भी हैं। यह सापेक्ष बात हो सकती है। 'कुण बेटो? कुण बाप? करणी आपो आप' इस संदर्भ में जीव अकेला है। यह स्थूल शरीर भी साथ नहीं जाता है। साथ में जाने वाले तो तेजस शरीर और कार्मण शरीर अगले जन्म में जाने वाले हैं। मोक्ष जाने में तो वे भी साथ नहीं रहते।

मोक्ष में अनंत सिद्ध साथ-साथ रहने वाले हैं, पर सबका अपना-अपना अस्तित्व है। कोई सिद्ध न तो किसी का सहयोग करता है, न कोई किसी से सहयोग चाहता है।

हमारा धर्म, हमारी साधना, हमारी आत्मा हमारी है और कोई किसी का नहीं है। इस मनुष्य जीवन में भला काम करें, धर्म की साधना, अध्यात्म की आराधना करें। साथ में दूसरों की जितनी धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा करें। अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छे फल मिल सकेंगे। व्यवहार की भाषा में एक अपेक्षा से हम सब एक हैं, पर निश्चय नय में मैं अकेला ही हूँ। इसलिए हम पाप-कर्म से बचने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**